१, ६

जयगुरुदेव

सत्संदेश

सतगुरु की अखण्ड वाणी द्वारा जीवनमें ही
अमर पद प्राप्त कराने हेतु मार्गदर्शनेवाली पत्रिका

र्ष २१ अंक २

न १९७८ [वार्षिक मूल्य १०)
एक प्रति १)

Scanned with CamScanner

❀ जयगुरुदेव ❀

अमर सन्देश

[सतगुरु की अखण्ड वाणी,
जीवन पथ की कहानी।
जीवन सुधारक वाणी,
जीवों की भव पार कहानी॥]

वर्ष	अंक
२१	२
जून	सन् १९७८
ज्येष्ठ	सं० २०३५

—❀—

प्राप्ति स्थान

व्यवस्थापक अमर सन्देश

२३ पाण्डेय बाजार

आजमगढ़ (उ० प्र०)

—❀—

प्रकाशक

चिरौली सन्त आश्रम

कृष्ण नगर

मथुरा

टेलीफोन नं०

—❀—

सम्पादक

विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल

—❀—

वार्षिक मूल्य

१०) रू०

एक प्रति का मूल्य १ रू०

अमर सन्देश के नियम

❀ अमर सन्देश हर माह की २६, २७ तारीख को प्रकाशित होता है जो पाठकों के पास माह की पहली तारीख या उसके पहले मिल जाता है।

❀ जिस माह की १० तारीख तक उस माह का अमर सन्देश न मिले तो अप्राप्ति की सूचना भेजें। सूचना ग्राहक संख्या तथा अपना पता सही और साफ जरूर लिखें। यह भी लिखें कि कौन सा अंक नहीं मिला। ऐसे लोगों को माह की २६ ता० तक अमर सन्देश भेजा जाता है।

❀ अमर सन्देश का नया वर्ष अब मई से आरम्भ होता है। जनवरी से नहीं। मगर आप किसी भी महीने से ग्राहक बन सकते हैं। इसलिए नये ग्राहक मनीआर्डर कूपन पर अवश्य साफ साफ लिखें कि वे किस मास से ग्राहक बनना चाहते हैं।

अमर सन्देश तथा अमर सन्देश की फाइलें पुस्तकों के साथ नहीं भेजी जा सकती क्योंकि अमर सन्देश रजिस्टर्ड पत्रिका है। उसका डाक का नियम अलग है अतः उसके लिए डाक खर्च प्रति फाइल दो रुपया अलग से भेजें। इस समय फाइल सब खतम हैं।

रुपये तथा पत्र भेजने का पता:-

व्यवस्थापक—

'अमर सन्देश'

२३, पाण्डे बाजार,

आजमगढ़ उ० प्र०

Scanned with CamScanner

स्वामी जी ने कहा

तीन बातें सदैव याद रक्खोः—

(१) किसी की निन्दा न करना न सुनना। निन्दा करने से उसके पाप के बोझे से तुम दब जाओगे।

(२) कम खाओ इससे आलस नहीं आयेगा शरीर तन्दुरुस्त तथा चुस्त और फुर्तीला रहेगा। साधन भजन ठीक बनेगा कहे

(२) गम खाओ अर्थात् बर्दाश्त करो। कोई कुछ भी। उसे सहन कर लो।

वर्ष २१ अंक २] जून १९७८ वार्षिक मूल्य १० रु० [एक प्रति १ रु०

भक्ति का महातम

भक्ति महातम सुन मेरे भाई।
सब संतन ने किया बखान ॥ १ ॥
यही मता गुरू मत पहिचानो।
और मते सब झूठ भुलान ॥ २ ॥
बिना भक्ति थोथे सब मानो।
छिनका है मोगी की हान ॥ ३ ॥
ताते भक्ती दृढ़ कर पकड़ो।
और सयानप तजो निदान ॥ ४ ॥
भक्ती इश्क प्रेम यह तीनों।
नाम भेद है रूप समान ॥ ५ ॥
भक्ति भाव यह गुरु मत जानो।
और मते सब मन मत ठान ॥ ६ ॥
प्रेम रूप आतम परमातम।
भक्ति रूप सतनाम बखान ॥ ७ ॥
भक्ती और भगवंत एक हैं।
प्रेम रूप तू सतगुरु जान ॥ ८ ॥
प्रेम रूप तेरा भी भाई।
सब जीवन को यों ही मान ॥ ९ ॥
एक भेद यामें पहिचानो।
कहीं बुंद कहि लहर समान ॥ १० ॥
कहीं सिध सम करे प्रकाशा।
कहीं सोत और पोत कहान ॥ ११ ॥
कहीं इच्छा परबल होय बैठी।
कहिं हुई माया बलवान ॥ १२ ॥
एक ठिकाने माया थाड़ी।
सिध प्रताप शुद्ध हुइ आन ॥ १३ ॥
सोत पोत में माया नाहीं।
वहा प्रेम ही प्रेम रहान ॥ १४ ॥
वह भंडार प्रेम का भारी।
जाका आदि न अंत दिखान ॥ १५ ॥
बिना सत पहुँचे नहिं कोई।
सतगुरु संत किया अस्थान ॥ १६ ॥
प्रेम भक्ति की ऐसी महिमा।
ग्रहण करो यह अमृत खान ॥ १७ ॥
ताते पहिले करो भक्ति गुरु।
पीछे पाओ नाम निशान ॥ १८ ॥
आरत कर कर गुरु रिझाओ।
पाओ उन से प्रेम निधान ॥ १९ ॥
राधा स्वामी कहत सुनाई।
मिला तुझे अब भक्ति दान ॥ २० ॥

Scanned with CamScanner

अमर सन्देश

वर्ष २१ अंक २
जून सन् १९७८

बचन महराज साहब--

सही सुमिरन ध्यान क्या है ?

प्रीतम की याद का नाम प्रेम है। जब याद आवेगी तब प्रेम आवेगा। जहां याद है, वहां प्रीतम आप मौजूद है; और जब वह मौजूद हैं, तब याद बनी रहती है। और चूंकि प्रीतम कुल मालिक है, तो जब उसकी याद है, तब गोया उसके चरन हिरदे में बस गये। इससे भक्त जन निहायत ही मगन और सरशार रहता है। विकारी अंग इसके झड़ते जाते हैं और सकारी अंग प्रवेश करते जाते हैं। जितने कि परमार्थी काम किये जाते हैं, उनमें अगर प्रीतम की याद नहीं है तो वह फीके हैं, और जो याद है तो उनका फल भी मिलता है यानी प्रेम आता है, नहीं तो खाली है।

कहने का मतलब यह है कि जितने जतन किये जाते हैं, उन सब से मालिक की याद का असर बड़ा भारी है। जब दया की धार आती है, तब याद आती है और जब तक ऐसी हालत नहीं है, तब तक भक्ति सिर्फ जतन है। अगर भजन भी किया, सुरत मन भी सिमटे, और प्रीतम की याद नहीं, तो उसकी कुछ भी हैसियत नहीं है, वह करनी प्रेम से रहित है और छिलका है।

प्रेम बिना सब करनी फीकी।
नेकहु मोहि न लागे नीकी।
घट धुन रख दीजे॥

प्रेम मुकदम है। हर दम प्रीतम की याद करना, यह भक्ति की रीत है। इसी को ध्यान कहते हैं और यही सच्चा सुमिरन है।

गुरु याद बड़ी अब मन में।
गुरु नाम जपूं छिन छिन में॥
खाते पीते चलते फिरते।
सोवत जागत बिसर न जात॥
खटकत रहे भाल ज्यों हियरे।
दर्दी के ज्यों दर्द समात॥
ऐसी लगन गुरू संग जा की।
सो गुरुमुख परमारथ पात॥
जब लग गुरु प्यारे नहि ऐसे।
तब लग हिरसी जानो जात॥

ध्यान तब होता है, जब मालिक का या उसके औतार का दरशन नर शरीर में होता है। बगैर दरशन के ध्यान नहीं होगा और न प्रेम आवेगा।

जिस को प्रीतम की याद नहीं है, उसमें गोया ऊँचे देश की धार आया नहीं है और जिसके चित्त की वृत्ति प्रीतम के जानिब मुखातिब है, उसका घाट चाहे नीचा ही हो, तो भी सत्त देश की धार आकर उसमें बासा करती है। बगैर धार को आमद के चाहे कितना ही सुरत मन के समेटने के लिए खेंचा तानी करे और तिल के खोलने का जतन करे, कुछ नहीं होगा। खयाल या अनुमान करने से कभी सुरत मन नहीं सिमटेंगे, न तिल का द्वार खुलेगा। गुरु स्वरूप का जो ध्यान करते हैं, वह स्वरूप चूंकि सत्त धार ने धारन किया है, उसका सूक्ष्म रूप

जो इसके अन्तर में प्रकट होता है, वह मन के घाट का नहीं है। वह रूप भी सत्ता धार धारन करती है। उसको हरदम हिरदे में धारने से तिल का ताला खुलता है।

गुरु कुँजी जो बिसरे नाहीं।
घट ताला छिन में खुल जाहीं॥
कहें कबीर निर्भय हो हंसा।
कुँजी बत'दूँ ताला खुलन की॥
दसवें द्वार कुंजी जब दीजे।
तब दयाल का दरशन कीजे॥
अनहद बानी पुंजी। सन्नन हथ राखी कुंजी॥
ताते शब्द किवाड़। खोलो गुरु कुंजी पकड़॥
महल माहिं धस जाय। गुरुमुख को रोकें नहीं।

मालिक से मिलने के लिए सतगुरु गोया द्वारा हैं। बगैर गुरु के मालिक से मेला हरगिज नहीं हो सकता है। अभ्यास से अगर कोई मालिक से मिलना चाहे तो हरगिज नहीं मिल सकता है। जो कुछ होता है, मालिक की दया मेहर से होता है, इसके जतन से कुछ नहीं होता हैं। जब तक जतन करता है, मजदूरी है, कर्म फल भुगतना है। चाहिये कि अलावा किसी जतन के अन्तर में विरह और खटक खलती रहे। जैसे पपीहा निस दिन स्वाँत बूंद के लिए पिउ प्यारा पिउ प्यारा पुकारता रहता है, वैसे ही इसको दिन रात प्रीतम के नाम की रटन करनी चाहिये अभ्यास का फल यही है कि तड़प और बेकली मालिक से मिलने की अन्तर में जागे और जब तक नेम से नपा तुला अभ्यास करता है, तब तक कुछ नहीं है।

जहां प्रेम तहं नेम नहिं, तहां न बुधि व्योहार।
प्रेम मगन जब मन भया, तब कौन गिने तिथि बार॥

सवाल–ध्यान किस तरह करना चाहिये, आपने तो जतन और जुगुती को उड़ा दिया?

जवाब–जैसे किसान खेत का ध्यान करता है, सूम धन का, इस तरह ध्यान करना चाहिये। इसमें कोई खास जतन और जुगत की जरुरत नहीं होती है। जिससे मोहब्बत है, उसका स्वरूप हर दम चित्त में समाया रहता है। यही ध्यान है, यानी प्रीतम की प्रीत और याद का नाम सुमिरन ध्यान है, और यही जतन और जुगती का नतीजा है, और यह जो जतन करता है यानी आँखें बन्द करता है और ध्यान में बैठता है, वह भी एक जुगती है उस प्रीत को पैदा करने के लिये। जैसे मां तकलीफ के वक्त भी अपने बच्चे को दूध पिलाना नहीं भूलती है या सूम को हर दम रुपियों की याद रहती है और खबर है कि कै रुपये खरे हैं और कै खोटे हैं, वैसे ही इस को दुख हो, चाहे सुख, हर दम प्रीतम की याद जो बनी रहे, तो सच्चा ध्यान है। संसार में जिन की आपस में मोहब्बत होती है, उनका जरूर कोई न कोई ताल्लुक है, तब तो प्रीत करते हैं। वैसे ही मालिक से प्रीत के लिये भी जाती ताल्लुक होना चाहिये यानी संस्कार होना चाहिये, और जैसे संसार में हालत बदलती रहती है, कभी दुख और कभी सुख होता है, वैसे ही परमार्थ में भी होता है। यानी कभी रूखा फीका होता है और कभी प्रीत प्रतीत आती है। जो कि संस्कारी है उसको भी कभी सरन दृढ़ होती है, कभी प्रेम आता है, कभी शब्द सुनाई देता है, कभी कुछ कभी कुछ होता है। इस तरह हालत बदलती रहती है। लेकिन ऐसे संस्कारी का बन्दोबस्त मालिक आप करता है, जतन से कुछ नहीं होता है। अब इस का यह मतलब नहीं है कि जतन जुगती नहीं करनी चाहिये। अगर जतन नहीं करेगा तो आलसी हो जायेगा। ऐसा बचन है कि अगर मौज पर रहोगे और जतन नहीं करोगे तो आलसी हो जाओगे इस वास्ते मौज के आसरे जिस कदर हो सके, जतन करते रहना चाहिये।

मन इन्द्रियों के घाट पर बैठ कर मौज २ पुकारना ऐसा है, जैसे ब्रह्मज्ञानी सिद्धांत पद को

Scanned with CamScanner

हासिल किये बिना अपने को ब्रह्म ज्ञानी कहते हैं और जैसे उन्होंने धोखा खाया, वैसे ही जो कि बिना जतन के मौज के आसरे रहते हैं, धोखा खाते हैं। जब तक कि मन इन्द्रियों के घाट के परे नहीं पहुंचा है और मौज को परख पहचान नहीं है, तब तक जतन जरूर करना चाहिये। जतन में आपे की आमेज़िश है। यह समझना है कि मैं करता हूँ और आपे से मालिक को नफरत है। जतन में रगड़, तपन और खैचातानी है फिर भी जतन करते रहना और नतीजा मौज पर छोड़ना चाहिये। अगर संस्कार है तो जतन से भी फायदा होता है। नहीं तो कुछ नहीं होता है। जल्दबाजी नहीं करनी चाहिये। जैसे देह का बढ़ाव होता है वैसे ही रुहानी ताकत का भी बढ़ाव होता है यानी धीरे धीरे परमार्थी परवरिश पाने से इस में प्रीतम की प्रीत समाती जाती है और याद बढ़ती जाती है।

स्वामी जी का कार्यक्रम

परम पूज्य स्वामी जी महराज ५ मई को आश्रम पर पहुंच गये। वहां १-२ दिन रह कर दिल्ली गये। पुनः मथुरा आश्रम आ गये। वहां के आवश्यक कार्यों को निपटा कर तब पुनः दक्षिण भारत के कार्यक्रमों में निकले।

१६ मई को मथुरा आश्रम से भरतपुर गये। वहां ठोकरवाड़ा में सतसंग हुआ। १७ को जयपुर में रहकर १८ ता० को परम पूज्य स्वामी जी महराज अहमदाबाद पहुंच गये। १९ को बम्बई, २० लोनावाला, २१ थाना महाराष्ट्र, २२ कुर्ला और शाम को शिवाजी पार्क बम्बई में सतसंग किये। वहां से इन्दौर के लिए प्रस्थान करने की सूचना है।

—:o:—

अमर सन्देश के प्रेमी पाठकों से

हम अपने प्रेमी-पाठकों से निवेदन करना चाहते हैं कि आपात काल के बाद मई माह से पत्रिका छपनी प्रारम्भ हुई थी। साकेत महायज्ञ अयोध्या में लोग ग्राहक बने थे। अब उनका वार्षिक चन्दा समाप्त हो गया है।

अतः जो लोग वार्षिक चन्दा अभी नहीं भेज पाये हैं वे कृपा कर वार्षिक चन्दा शीघ्र भेजें।

पिछले वर्ष सभी व्यवस्थायें छिन्न भिन्न थीं। लोग आपातकाल से इतने आतंकित थे कि पिछले वर्ष ग्राहक बनने में हिचकते थे। अब पुनः उनसे अनुरोध है कि महापुरुष की वाणी घर घर में फैलाये इस हेतु आप नये ग्राहक बनें। कृपया कूपन पर नया ग्राहक या पुराना ग्राहक अवश्य लिख दें।

—व्यवस्थापक अमर सन्देश,
२३, पाण्डेय बाजार, आजमगढ़ उ० प्र०

Scanned with CamScanner

देवता प्रसन्न हुये

(साकेत महायज्ञ अहमदाबाद का सतसंग रात्रि ७–३० बजे दि० ४–१–७८)

महायज्ञ सम्पन्न हुआ

बच्चे बच्चियों, आज यह बड़ा परम; अंतिम दिन का, सौभाग्य है। आज सतयुग आगमन साकेत महायज्ञ विधिवत आहुति और आरती के साथ सम्पूर्ण हो गया। यह आज भारत में बहुत ही अद्वितीय सद्भाव के साथ ३३ करोड़ देवता आप सबके सामने इस साबरमती नदी में उपस्थित थे।

देवता हमारी प्रार्थना स्वीकार किये

बाबा जी ने कुछ दिन पहले आपको यह बताया था कि मैं देवताओं से प्रार्थना, भारत की समृद्धि के लिए, कर रहा हूँ। मेरा ऐसा विश्वास है कि भारत वर्ष के देवता हम सब गरीबों, हम सब मानवों की प्रार्थना को स्वीकार जरूर करेंगे।

प्रधान मन्त्री नहीं बल्कि देवता यह सब करते हैं

यह बात सत्य है कि भारत के प्रधानमंत्री के हाथ में पानी बरसाना नहीं। भारत के प्रधान मंत्री के हाथ में गर्मी लाना नहीं। भारत के प्रधान मंत्री के हाथ में जाड़ा लाना नहीं। जाड़ा लाना, गर्मी लाना, बरसात ले आना यह किसके हाथ में है ? देवताओं के। पंच देवता जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु, आकाश। इनको यदि प्रसन्न किया जाय तो यह सब के सब समय पर बरसात, जाड़ा और गर्मी उतना ही दें जितनी जरूरत है। लेकिन यदि यह कहो कि राज्य के हाथ में गर्मी बरसात जाड़ा होता है देना, यह भूल हो जायगी।

जिसका जो काम है वही करता है

जिसका जो काम होता हैं वही काम करते हैं जिसका जो काम नहीं होता वह नहीं करते हैं। हमने देवी देवताओं को प्रसन्न करने की बात आपके सामने रखी थी। और यहां पर सतयुग आगवन साकेत महायज्ञ का जो कार्यक्रम शुरू हुआ था प्रारम्भ में और यह कहा गया था कि यह विधिवत सम्पूर्ण होगा। और आज देश की जनता, गुजरात की जनता सभी नर-नारी इस आनन्द में, इस प्रेम में सबके सब विभोर हैं।

देवताओं ने क्या कहा ?

देवताओं ने जो अपना प्रस्ताव पास किया है हमने जो प्रार्थनाएं की उन्होंने उसको मान लिया और उन्होंने यह कहा बड़े ध्यान से आप सुनें। ३१ मार्च सन् १९८२ तक आप सब लोगों को सावधानी के साथ में रहना पड़ेगा। और ३१ मार्च सन ८२ के बाद एक भारी युग का परिवर्तन देश में होगा। उसी समय पर भारत को महान शक्तियों का सारे देश में प्रादुर्भाव अथवा उनका देश में ईश्वरीय और मानवता का आपके सामने सारे मनुष्यों में एक बहुत बड़ा असर होगा।

Scanned with CamScanner

देश में बहुत बड़ा परिवर्तन होगा

उस समय पर भारत में मानव के हृदय में एक नई लहर का जागरण ऐसा होगा जो आज मनुष्य उसके लिए विश्वास नहीं करता।

सन २००० आने तक चकाचौंध हो जायेगा

देवताओं ने अपने प्रस्ताव में यह पास किया कि आप ने जो प्रार्थनाएं की वह हमने मान ली और सतयुग आगमन साकेत महायज्ञ की स्वागत तैयारियों का जो ढिंढोरा साबरमती से प्रारम्भ किया है यह हम पूरा का पूरा दो के ऊपर में जितने शून्य पैदा होते हैं। दो अक्षर बनाने के ऊपर में जितने भी शून्य आते हैं। यह तो उन्नीस है। और दो बना दिया उसके ऊपर में शून्य रख दिये वह कितने शून्य दो के बाद तीन शून्य। सारे भारत वर्ष में सारी दुनियां के लिए भारत जब दो अक्षर के ऊपर में जब तीन शून्य आ जायेगा सारे विश्व में भारत को देखकर चकाचौंध हो जायेगा।

यह देवताओं ने अपना प्रस्ताव पास कर और आज हस्ताक्षर कर दिये। उनके हस्ताक्षर हो गये और उन्होंने कल ही मुझको बता दिया कि यज्ञ सम्पूर्ण विधिवत कल ही पूरा हो गया मैंने कल उसकी सांयकाल आप को घोषणा कर दी।

मैं उस मनुष्य पर विश्वास नहीं करता

मैं वहीं तक मानव पर विश्वास करता हूं जहां मानव पथ का प्रतिपादन करता है। चरित्र का प्रतिपादन करता है। लेकिन जब अपने मानवता और सत्यता और चरित्र को जब छोड़ देता है तो मैं मनुष्य पर विश्वास नहीं करता। फिर तो मैं उस मनुष्य को पशु समझता हूं। वह पशु कहा जायगा। क्या करेगा यह कुछ नहीं कहा जा सकता। उसका क्या होगा यह भी कुछ नहीं कहा जा सकता।

गोस्वामी जी की चौपाई का सही अर्थ

तो आज की प्रवृत्ति जो वर्तमान में दिखाई दे रही थी वह मानव की पशुवत थी। और क्या जा रही थी यह कोई नहीं कह सकता। इसलिए पशुवत जो प्रवृत्ति, पशुवत जो स्वभाव, पशुवत जो भोग और पशुवत जो अज्ञान मानव में इस समय पर छाया हुआ था। इस समय वर्तमान में उसके लिए गोस्वामी जी महराज ने कहा था कि

ढोल गंवार पशु अरु नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी।।

जिन लोगो ने रामायण के अर्थ का अनर्थ कर दिया कि नारी शब्द आया है देवियों के लिए यह सबसे बड़ी देश वासियों की भूल हो गई। उन्होंने उस रामायण का अर्थ का अनर्थ कर दिया। हमारे महापुरुषों के विज्ञान में नारियां इन्द्रियां होती हैं। जब इन्द्रियां भोगों में लिप्त हो जाती हैं तो उनको ताड़ना देना अनिवार्य होता है। कुदरत ताड़ना दे, महान आत्मा ताड़ना दे या उनसा कुकर्म ताडना दे या उनको ठोकर ताड़ना दे। इन्द्रियों को कहते हैं नारी। देवी को नारी नहीं कहा।

गोस्वामी जी त्रिकाल दर्शी थे उनकी बात गलत नहीं हो सकती

लेकिन लोगों ने रामायण का अर्थ का अनर्थ कर दिया। जिसने रामायण को बनाया और इतने बड़े विज्ञान ग्रंथ को बना त्रिकाल-दर्शी बना-जिसने यह कहा कि मैंने अनेकों ब्राह्मण्डों को देखा। जिसने यह कहा कि मैंने प्रभु का साक्षात्कार किया। जिसने यह कहा कि मैं आदि से अन्त तक जानता हूँ। ऐसे महापुरुष के सम्बन्ध में आज ये पशुवत अज्ञानी लोगों ने यह कहा कि रामायण झूठो है और उसमें नारियों के ऊपर, आदमियों के ऊपर देवियों के ऊपर, कटाक्ष किया।

Scanned with CamScanner

देवियों के लिए कभी किसी ने नहीं कहा

देवियों के लिये नारियों के लिये, न किसी ने सतयुग में कहा, न त्रेता व द्वापर में कहा। अगर कह दिया होता तो आप सीता की पूजा नहीं करते। ये कि सीता को दोष लगा दिया था कि वह रावण के पास चली गई। लेकिन जब कि भारत में आज भी सीता की पूजा होती है। राधिका। आप उनको जानते हैं आज उनकी पूजा होती है। तो

ढोल गंवार शूद्र पशु नारी।

जिसकी इन्द्रियां भोगों में पशुवत, जिसकी इन्द्रियां अपने शुभ कर्मों को छोड़कर और क्षणिक गंदगी में फंस गई। उनको कहते हैं इन्द्रियों को "नाड़ी"। देवियों के लिये इन माताओं के लिये इन बहनों के लिये गोस्वामी जी महराज ने रामायण में नहीं कहा था।

ऐसा जो पत्र आप का आया उसका प्रस्ताव देवताओं ने पूरा कर लिया और बाबा जी की प्रार्थना पूरी हो गई।

अब आपको थोड़े दिनों इन्तजार करना पड़ेगा

अब आप को थोड़े दिनों के लिये बाबा जी के सतयुग आगवन ढिढोरे का इन्तजार करना है। उसे तो करना ही पड़ेगा और सतयुग का प्रभाव का भी इन्तजार जब दो के ऊपर में तीन शून्य आयेगा उसके पहले ही आप को कर लेना होगा। ये बड़ी गोपनीय बड़ी रहस्य मयी, ये ईश्वर की प्रेरणा, लीला दया और कृपा है। हम नहीं जानते हैं ये तो दिल्ली के लोग जानें।

दिल्ली की भूमि अपवित्र हो गई है

हमने ७५ के पहले ये कहा कि यदि कोई नया शासक देश में जनता को खुशहाल बनाना चाहता है तो हमारे भारत का ये इतिहास है कि दिल्ली की भूमि पर बैठ कर कोई आदमी भारत की जनता को खुशहाल नहीं बना सकता इसका मतलब ये कि दिल्ली की भूमि बड़ी अशुद्ध है।

श्रवण कुमार का उदाहरण

जब श्रवण कुमार हरिद्वार की तरफ से आ रहे थे और जमुना जी के किनारे उस पार पहुँचे तो उनका मस्तक खराब हो गया। उन्होंने कहा कि मैं तीर्थों पर विश्वास नहीं करता-मेरी श्रद्धा तीर्थों में नहीं है। माता पिता देखते रहे कि हमारा बच्चा इतना भक्त, आज्ञा-कारी, इसे ये क्या हो गया?

वे बोले-बेटा तुमको क्या हो गया?

श्रवण कुमार बोले-जो कुछ भी हो गया हो लेकिन मेरी आस्था तीर्थों में नहीं। न गंगा में न जमुना में, न मथुरा में न हरिद्वार में। न काशी में, न द्वारिका में, कहीं मेरी आस्था नहीं।

माता पिता बेचारे असहाय। उन्होंने कहा अरे बच्चा तुम जरा इधर दिल्ली से मथुरा की तरफ निकाल देना और हमको छोड़कर चले जाना।

दिल्ली के भूमि पार होते ही आस्था आई

जब दिल्ली की भूमि से जमुना से इस पार श्रवण कुमार आये तो बहुत कुछ कहने लगे। हम थक गये, हमसे कुछ नहीं होता माता पिता की सेवा भी नहीं होगी-यह सब व्यर्थ है तीर्थ। माता पिता को कहां तक कंधे पर लादे फिरा जाये?

कहते कहते दिल्ली की भूमि से उस पार हो गये। और जब भूमि के पार निकल गये श्रवण कुमार तेजी के साथ चलने लगे। और जबान उनकी बंद हो गई। माता पिता ने देखा ध्यान लगाकर। कहा अरे बच्चा, जरा ये रक्खो तो। ये दोनों तरफ जो बैठाये हुये हो तो रख दिया।

कहा बेटा तुम तो थक गये हो बोले? हमको यहाँ छोड़ दो।

Scanned with CamScanner

कहने लगे-नहीं पिता जी मैं तो बिल्कुल नहीं थका। मैं तो बिल्कुल ठीक हूं। मेरी आस्था धर्म में। मेरी आस्था तीर्थों में। मेरी आस्था देवता में। मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ माता पिता की सेवा का।

श्रवण कुमार के माता पिता श्रवण कुमार को आदेश दिया अरे बच्चा-ये जानते हो कि ये भूमि कौन सी है? दिल्ली है। दिल्ली की भूमि है इसका असर मालूम है?

दिल्ली के दरख्त फलदार नहीं।
दिल्ली के आदमी मिलनसार नहीं।
दिल्ली की नारियां वफादार नहीं।
दिल्ली हटकर किसी झोपड़ी में बैठक करें

बड़े ध्यान से सुने। बाबा जी ने सन् ७५ के पहले से यह घोषणा की थी कि एक बार देश वासी जनता की समृद्धि के लिये। जनता की खुशहाली के लिये। जनता के न्याय के लिये जनता की सुरक्षा के लिये। यदि शासन ८-१० महीने एक साल कोई झोपड़ी बनाकर वहाँ बैठकर विचार विनिमय कर लें। दिल्ली के सभी महल आज की तरह रिजर्व रहें उनमें दूसरा कोई नहीं। झाड़ वगैरह सब लगती रहे। बिजली सब जलती रहे। टेलीफोन सब लगे रहें लेकिन एक आधा साल के लिये कहीं-दिल्ली से हटकर आप दुबारा विचार विनिमय कर लें आपके दिमाग में इतना बड़ा भारत की जनता के लिये ज्ञान खुल जायेगा बुद्धि का कि सारे देश की जनता खुशहाल हो सकती है।

ये आपको ऐसे नहीं इधर भी समझकर इधर भी समझकर मानना पड़ेगा।

१० करोड़ को तैयार करना है

बड़े ध्यान से बाबा जी की बात को सुनने की जरूरत है। ये तो आयेगा ही इसमें शक नहीं है। मुझे ३१ मार्च सन् १९८० तक दस करोड़ आदमियों को भारत में तैयार कर देना। एक सूत्र में बांध देना है।

बाबा जी सब कुछ देते हैं

मुझसे बहुत से लोग कहते हैं-और वे समझ नहीं पाते हैं-ये शिक्षा? ये प्रेम? बाबा जी के पास क्या है? बाबा जी किसको क्या देंगे? ये किसी की समझ में नहीं आता। किन्तु समझ में बाद में आ जायेगा। हम अनुरोध करते हैं। प्रेम करते हैं। जिस कार्य में लगे हैं हम अपने निशाने पर हैं। गांधी महात्मा चूक गये। बाबा जी चूकने वाले नहीं। गांधी महात्मा ने अपना काम पूरा नहीं कर पाया। गांधी महात्मा राजनीति के साथ बंधे हुए थे। और हम राजनीति से धर्म के साथ राजनीति से जुड़े हुये हैं।

सभी मानव जाति एक है

हमारे पास पक्का धर्म है-कच्चा नहीं है। हमने इस मैदान में एक निशाना बना कर। निशाना किसका बना होगा? जब हम सारी मानव जाति को एक आदमी समझते हैं दूसरा कुछ समझते ही नहीं। उसमें रहने वाली एक भगवान की आत्मा के सिवाय कुछ नहीं है। इसलिये आपको सोचना पड़ेगा। विचार करना होगा।

सन २००० आने पर सब सिजदा करेंगे

एक बार फिर आप यह याद करें कि २ के ऊपर तीन बिन्दी लगने पर सारे विश्व के लोग इस भारत भूमि और भारत के लोगों को सिजदा करने लगेंगे। भारत के मनुष्यों को क्या समझने लगेंगे? सिजदा कहते हैं अपना सिर रख देना-सिजदा मुसलमानी शब्दों में-यानी किसी के कदमों में समर्पण हो जाना।

सारा विश्व यहां की विभूतियों से नाचेगा

सतयुग आगमन साकेत महायज्ञ भारत में

जो स्थापित होगा वह सारे विश्व को-भारत की बात छोड़िये-यहां की विभूतियां सारे विश्व को नचाया करती थी। और वही वक्त आपके लिये आने वाला है कि सारा विश्व भारत की विभूतियों से नाचेगा। न इससे अमेरिका बचेगा-न चीन बचेगा। न रूस बचेगा। छोटे छोटे मुल्क क्या बचेंगे। इन सबको भारतवर्ष इतना भौतिक वैज्ञानिक बनेगा कि जिसको देखकर लोग चकित होंगे साथ ही साथ ऐसा आध्यात्मिक देश बनेगा कि जिस शान्ति के लिये भारत प्रसिद्ध रहा। या यह गुरू बना रहा आचार्य बना रहा। ऐसा ही शक्तियों का केन्द्र रहा। बड़ी बड़ी विशुद्ध शक्तियां भारत भूमि-पर कर्म क्षेत्र में रही। ये ऐसा गुरू बनेगा कि सारा का सारा ही विश्व भारत भूमि से मनुष्यों से-दैवी शक्तियों का गुरू मानने लगेगा।

देवताओं ने एक हजार प्रस्ताव पास किये हैं

अभी नहीं मालूम है आपको। १००० प्रस्ताव पास किये हैं देवताओं ने और उन्होंने निश्चित कर दिये हैं। मैं यह जानता हूँ कि इस समय पर हमारी बातें सबको अटपटी मालूम होती है। हमारी बाते उलझन की मालूम होती हैं।

उल्ट कुंआ गगन में विरला पक्षी पिये।

कबीर ने कहा कि गगन मे। गगन कहते हैं आकाश को। वहां उल्टा कुंआ है। और लोगों की समझ में नहीं आता? कुंआ तो जमीन में होता है-लेकिन कबीर दास जी कहते हैं कि आसमान में कुंआ। और इस भाषा को कौन समझें।

महात्माओं की भाषा समझ में नहीं आती

तो महात्माओं की भाषा समझ में नहीं आती है लेकिन जब निकट में आ जाते हैं तो इतनी सरल भाषा-इतनी सुलभ भाषा है-कि जिस समय पर मानव की आत्मा का योग सिद्ध होता है मनुष्य रूपी मकान में तो ये सब उल्टे कुएँ दिखाई देने लगते हैं जो हमारी बुद्धि में, समझ में नहीं आते।

कृष्ण भगवान ने भी कहा था

कृष्ण भगवान ने कहा-हे अर्जुन! ज्ञान बुद्धि से परे है। आत्मा बुद्धि से परे है मन बुद्धि से परे हैं। स्वर्ग वैकुण्ठ आपकी बाहर की इन्द्रियों से परे हैं। और आपको इसका कुछ ज्ञान नहीं। जो चीज परे है वे ऐसे कैसे अंधेरे में आ जायेगी। वह तो उजाला वहां प्रकाश है, वहां light है।

सबका सम्मान रहना चाहिये

तो इस लिए मैं आप से निवेदन और प्रार्थना करता हूँ कि आप बहुत ही परम सोभाग्यशाली हैं। यह तो बाबा जी ने देवताओं से प्रार्थना की कि भारत का सम्मान और भारत के मनुष्यों का सम्मान रहना चाहिए। जो परिवर्तन एक क्षणिक रूप मे आप के सामने हुआ उसके लिए प्रार्थना की। अब उन्होंने क्या कहा यह तो आप को मालुम हो जायगा। लेकिन उन्होंने यह भी प्रस्ताव में पास कर दिया।

कहा था कि आप ने जो जनता से वादा किया है पूरा करें

आज विदेश मंत्री जो आप के सामने उपस्थित हुए थे उस समय पर यह कहा था कि आप सब लोग एक काम करने के लिए एक रहिए दो मत हो जाइये। प्रेम के साथ जो जनता को बचन दिया है सेवा करने का और जनता ने अपना कर्त्तव्य पूरा निभा दिया। और निभाया। अगर इस बादे से कोई पीछे हटता है तो आप को यह समझ लेना चाहिए कि भारत धार्मिक

देश है और इसमें महान आत्माओं का प्रादुर्भाव होगा और सारे देश की बागडोर महान आत्माएं संभाल लेगी।

महान आत्मायें सब करेंगी

उस समय पर फिर क्या होगा यह तो आप को समझ ही लेना है। और यदि ऋषियों मुनियों ने समय आने पर देश की बागडोर को सम्भाल लिया और संशोधित करके चाहे राम अंगद को, चाहे राम सुग्रीव को और चाहे राम विभीषण को राज्य दे दिये यह तो अलग बात है। लेकिन एक बार रावण मार कर के किसी को भी राज्य शुद्ध करके दिया जा सकता है।

गुजरात की जनता को कीर्ति

तो यह बहुत बड़ा साबरमती नदी में यह समस्याओं का समाधान और प्रस्ताव देवताओं के समक्ष इस समय पर पास हो गया। दस्तखत कर दिये हैं। मैं गुजरात को इस विशाल जन समूह जनता से अनुरोध करता हूं कि बापा जी की समय समय पर एक एक बात को समझने के लिए आप उत्सुक रहें जिससे कि गुजरात की जनता का भावी भविष्य में एक बहुत उच्च स्थान कीर्ति का, नाम का, शोभा का और प्रेम का और सत्य का और धर्म का होगा।

सब सत्य होकर रहेगा

मैं गुजरात की जनता से यह उसको याद दिलाऊंगा कि साबरमती नदी जिसमें इतना बड़ा कार्यक्रम हो रहा इस साबरमती के इतने बड़े कार्यक्रम को हमेशा उज्जवल रखे और यह आप के सामने सब कुछ आ जायेगा। हमने जो कुछ भी आप के सामने कहा कि जंगलो में लगोटी लगाने वाले कपड़े पहनने लगेंगे। हम कभी भी दिल्ली में नहीं कहेंगे कि आप इनको कपड़ा दे दीजिए। लेकिन जिस समय पर आप की बुद्धि शुद्ध होगी, इन्द्रियां शुद्ध होगी, काम शुद्ध होगा, भाव शुद्ध होगा, अन्तःकरण शुद्ध होगा और मन शुद्ध हो जायगा तो देश की सभी समस्यायें आपके सामने शीशे की तरह से दिखाई देगी।

सारी जनता कुछ नहीं चाहती बस प्रेम चाहती है

सारा देश कुछ नहीं चाहता। एक वस्तु का भूखा है। उसे कुछ नहीं चाहिए। यह तो मैं अपना भाग्य लेकर आया हूँ मुझे रूखा मिले। मुझको सूखा मिले मुझको फटे कपड़े मिले। मुझको काला मिले या सफेद मिल जाय। यह कुछ नहीं। मनुष्य अपना अपना भाग्य लेकर आता है उसे कुछ नहीं चाहिए। लेकिन इस दुनियां में मां के द्वारा, पिता के द्वारा। मित्रों के द्वारा, राजा के द्वारा. महात्मा के द्वारा। ये सारे देश की समूची जनता क्या चाहती है? प्रेम। प्रेम की भूखी है। इसको प्रेम दीजिए।

प्रेम में कोई गलत काम नहीं करेगा

जब प्रेम इसको मिल जायगा न कोई चोरी। न इसको कोई कतल। न कोई झूंठ बोलेगा। न कोई धोखा देगा। न कोई किसी की वस्तु को लेगा। आज भारत की जनता प्रेम से जुदा कर दी गई। और अब यह प्रेम की तरफ, उस प्रेम की हवा में आई। जरा सी हवा लगी। अभी तो केवल उसमें उतना ही हवा लगी है कि सतयुग आगमन स्वागत की तैयारियां हम लोगों को करनी हैं इसको हवा लगी।

देवता प्रसन्न होकर सम्पन्न कर देंगे

और जब सतयुग आयेगा तब क्या होगा? यह आपको मैं बिलकुल सामने हूं। और इस जमीन में यह हमारा पानी है। जल देवता है। जब बरसेगा और पृथ्वी माता जब तर हो जायगी, अनुकूल रूप में। इतना। अब मैं स्वास्थ्य मंत्री जी से, अपने नेता जी से, यह अनुरोध करूँगा कि कभी भी इस बात पर विचार न करें कि मुझे कोई निवेदन करना है।

Scanned with CamScanner

वे तो क्या विचार करे ? इसको समझने की जरूरत । मैं इनको विश्वास दिलाता हूँ कि यदि आप सब लोग मेरी बात को मान लो और दो वर्ष के अन्दर जो ६५ करोड़ की आबादी हिन्दुस्तान में इस समय पर है । वह आबादी बढ़कर दो साल के अन्दर बढ़कर, एक अरब और ३० करोड़ की हो जाए तब भी भोजन सबको मिलेगा । सबको कपड़े मिलेंगे । सबको रहने को स्थान मिलेगा । सबको काम मिलेगा । लेकिन मेरी बात को मानना पड़ेगा ।

भूतपूर्व कुर्सी तथा कमरे का इस्तेमाल न करें

मैंने भारत की जनता के समक्ष भारत के प्रधान मंत्री से अनुरोध २३ फरवरी को किया था कि भूतपूर्व आप कुर्सी पर मत बैठिये और इस बंगले और कमरे में आप कोई काम मत कीजिए । चाहे आपको झोपड़ी दिल्ली के किसी भूमि पर बना करके काम करना पड़े करें । लेकिन मेरा उन्होंने किसी ने ध्यान नहीं दिया । नेता जी भी शायद इस पर भी कुछ कहा होगा । मगर इनकी बात कौन सुनता है ।

जमीन का बड़ा असर होता है

मुझे यह पता चलता है कि जमीन का बड़ा ही बुरा असर हुआ करता है कि बुद्धि काम नहीं करती । और अगर भारत के प्रधान मंत्री एक झोपड़ी बनाकर और काम करने लगे तो सारे देश की जनता उनके पीछे य'नी प्रेम में विभोर हो जायेगी लेकिन अफसोस है कि आज तक भी इतना बड़ा जन समूह जो आपके सामने उपस्थित है । जो अभी तक किसी भी प्राइम मिनिस्टर के सामने इतना जनसमूह उपस्थित आज बीसों दिन से यहां पड़ा हुआ है- नहीं हुआ है ।

जितने सामने हैं इससे ज्यादा पीछे हैं

इतना वह समूह सामने से दिखाई दे रहा इतना ही टेन्टों में पड़ा हुआ है । अगर ये सबके सब आ जायें और इनसे पूछा जाय कि तुमको क्या मिलने जा रहा । तुम क्या लेने जा रहे ? क्या कोई इनका समझा सकता है ? ये क्या लेने जा रहे ? ये क्यों खड़े हुए हैं ? ये क्यों ऊपर हैं क्यों खड़े हुये हैं ? क्यों नहीं बैठते हैं ? इनसे कहा जाता है घर चले जाओ । क्यों नहीं जाते हैं ? कोई वजह जरूर है ।

जनता अपना खोया हुआ प्रेम चाहती है

इसलिए भारत की जनता ये अपने खोये हुए धर्म को अपने खोये हुए प्रेम को, अपनी खोयी हुई आत्मा को, अपने खोये हुए ज्ञान को अपनी खोयी हुई बुद्धि को, अपने खोये हुए मोक्ष को, अपने खोये हुए परमपिता को उसको यह चाहती है । कि ये तो सब कुछ देखती है दुनियां में क्या आज चीजें हैं कल चली जा रही है । आज आदमी है कल उसकी मौत हो जाती है । आज ये चीजें दिखाई देती हैं और कल सत्य हो जाती है । आज भूकम्प आ गया तो आज न ये आ गया । तो कल वह हो गया । इस तरह की घटनाएँ । न्याय ? नित्य प्रति होती रहती है ।

परमात्मा की झलक चाहती हैं

तो जनता जनर्दन ये जो बैठी हुल मानव अनमोल तन में, कुछ न कुछ बुद्धि ज्ञान से समझ लेती है और समझती है । लेकिन बात ये क्या चाहती है ? ये परम पिता परमात्मा को जिसको हमसे संदियों से छोड़ दिया और आज तक उसको उसकी झलक यहो मिली । उसी के लिए दिवानी और पागल है । वह सोचती है कि कपड़े में मिल जायेगा । खाने में मिल जायेगा । जमीन में मिल जायेगा कहीं दफ्तर में मिल जायेगा । बड़े पद पर मिल जायेगा । लूट में मिल जायेगा, कत्ल में मिल जायेगा ।

Scanned with CamScanner

आदमी के मारने में मिल जायेगा। जानवर के मारने में मिल जायेगा। ये अनेक उपाय से अपनी वस्तु की तलाश इस देश में करती है। लेकिन यहां उसको कुछ नहीं मिल रहा है।

बहुत कड़ा काम होना है

ये मेरी निवेदन प्रार्थना इस बात की है कि हम बहुत बड़ा राष्ट्र का बहुत बड़ा समाज का। बहुत बड़ा चरित्र का बहुत बड़ा सदाचार का। बहुत बड़ा सत्यता का, बहुत बड़ा एकता का और सदभाव का। इतना बड़ा काम कर रहे हैं कि इतना बड़ा काम किसी ने किया नहीं।

गान्धी जी तो अंग्रेजों को निकालने में लगे रहे

हम तो ये समझते हैं कि गांधी जी का सारा समय तो केवल अंग्रेजों को निकालने में चला गया था। लेकिन भारत के लिए उन्होंने एक दिन भी नहीं दे पाया। मैं तो जब उनको कहता हूँ कि कुछ समय उनको भारत में काम करने के लिए भारत को जनता के लिए मिल जाता। वह तो उस काम में लगे रहे। उन्होंने अपना काम कर दिया। तब तक उनको लोगों ने रवाना कर दिया। गांधी जी का बाकी सब काम पड़ा हुआ है। उसको करना है। उसको मानना है।

गान्धी जी का सब काम तो पड़ा हुआ है

हम समझते हैं कि वे एक अच्छे व्यक्ति थे। एक अच्छे आदमी थे। उनका काम पड़ा हुआ है। करना चाहिए। चलो अगर दूसरे का समझ कर यदि नहीं करते हो तो अपना ही समझ कर करो। उनका छोड़ दीजिए, हमारा ये काम है। हम काम ये किसी का नहीं समझते हैं। हम तो काम अपना समझते हैं। गांधी जी अपना काम करके चले गये। हमको जो आदेश हुआ था आपको। अपने शक्ति से केवल अंग्रेजों को निकालना था। तो अंग्रेज चले गये। उनका काम समाप्त हो गया। अपना-अपना पार्ट एक मंच पर खेलने के लिए आते हैं। वह अपना पार्ट करेंगे। हनुमान अपना पार्ट करेंगे। राम अपना पार्ट करेंगे। कृष्ण अपना पार्ट करेंगे। अपना अपना पार्ट मंच पर अदा करेंगे।

मुझे अपने काम पर पूरा विश्वास है

तो सब लोग पार्ट अपना-अपना करने आते हैं। अपना पार्ट पूरा किया और चल दिये। इसी तरह से बाबा जी का भी एक पार्ट हो रहा। और शुरू हो गया। हम ये समझते हैं कि ये मुझे विश्वास है। वैसे किसी को विश्वास न हो इसकी मुझे कोई परवाह नहीं। लेकिन मुझको और इनको विश्वास है। ये जो बैठे हुए हैं इनको विश्वास हो रहा इनको मालुम हो गया कि बाबा जी नपी-तुली बाते करते हैं और जो जनहित के लिए होंगी। और इसलिए आप लोग दोनों काम करो। लोक का भी काम करो और मर्यादा का भी।

प्रेम और लगन के साथ अपना काम समझ कर करो

प्रेम के साथ दुकान में खूब काम करो। कारखाने में खूब काम करो। खेत में काम करो लेकिन एक काम करो जरा सी भी उसमें कमी मत रखो। शान्ति के साथ में सब लोग रहो। अच्छी तरह से, प्रेम से। हर सामान को अपना समझो। य काम शरीर रक्षा के लिए पूरे दिल से पूरी ईमानदारी के साथ करो। और साथ ही साथ में अपना काम भी करना है।

जीवात्मा के लिए भी काम करो

ये काम क्यों करना है? ये काम आज का नहीं है। मिले हुए किराये के मकान का काम है। और इस मकान में जो जीवात्मा रहती है उसके लिए आप ने कोई काम नहीं

Scanned with CamScanner

किया। उसके लिए आप को काम तब शुरु करना है जब बाबा जी आप को बता दें कि वह आप का सच्चा काम है। और उस काम का फल आप के साथ चलेगा। इस काम का कोई फल नहीं। इस काम का कोई सामान एक बालुका के कण के समान भी आप के साथ नहीं जाना है।

दुनियां का भी काम करना है जीवात्मा का भी

तो हमने ये भी मना नहीं किया कि जब तक आप का शरीर रहे तब तक ये काम करो। और साथ ही साथ इसी शरीर में रहकर अपने जीवात्मा का भी काम कर लो। अच्छा सुन्दर महल, अच्छे सुन्दर देश। अच्छा सुन्दर स्थान और अच्छी सुन्दर सामग्री। अच्छा सुन्दर धन जमा कर लो और वहां पर पहुँच कर इसको खाली करो और अपने घर में रहने लगो। यही मनुष्य की बुद्धिमता है और वही मनुष्य सबमें सबसे श्रेष्ठ और महान कहलाता है। इसको करना बहुत जरूरी है। ये किराये का मकान है। मैं आप के सामने बहुत सीधी साधी बातें रखता हूं।

परिवर्तन अवश्य होगा श्रेय कोई भी ले लें

अब तो परिवर्तन होगा। निश्चित परिवर्तन होगा। चाहे नेता जी कर दें और यह श्रेय ले लें। चाहे हमारे भारत के प्रधान मंत्री मोरार जी भाई कर दें। उसका वह श्रेय ले लें। हमको कोई बात नहीं। चाहे हमारे अटल बिहारी बाजपेई जी कर दें वह चाहे श्रेय ले लें। चाहे हमारे श्री मान चरन सिंह जी महराज कर दें और वे श्रेय ले लें। मगर यह काम किसी न किसी तरह करना है। बिना काम किये हुये अब आप की जान छुटने वाली न तो आप की मंत्री की है और न नेता जी की और न अटल बिहारी बाजपेई की है। और न चरण सिंह जी की और न अन्य विधायकों की। आप जरा सा भी अपनी प्रतिज्ञा से इधर-उधर हुए तो देवताओं का जो प्रस्ताव पास हो गया है समझ लीजिएगा आप। सीधे करना है। आपको यह नहीं की मैं नहीं करूगा। ऐसी बात नहीं। जनता ने संकल्प किया है कि पांच साल के लिए आपको अपनी सेवा के लिए बैठाते हैं। आपको संकल्प का जनता का पूरा अपनी यथा शक्ति, यदि शक्ति आपके पास नहीं है तो बाबा जी देने के लिए तैयार हैं। जिस तरह से अर्जुन को कृष्ण भगवान ने दे दी थी। अगर वास्तव में चाहते है तो आप को दे दी जांय मोरार भाई को दे दी जाये। चरण सिंह को दे दी जाय। अटल विहारी बाजपेई को दे दी जाय। लेकिन काम ही हमको इन्हीं से लेना है। जो स्थान पर रहेगा। बाबा जी को कुछ नहीं करना। कृष्ण भगवान ने कुछ नहीं किया। काम तो उन्होने पाण्डवों से लिया। समझ लीजिए आप। काम तो आप से लेना। क्यों कि आप बचनवद्ध हैं और जनता भी बचनबद्ध है। किसी तरह से निकल नहीं सकता है कोई।

देवता के प्रस्ताव गलत होने वाले नहीं हैं

ऐसा १००० प्रस्ताव पास कल तक हो गये देवताओं के। कोई निकलने की गुंजाइश नहीं। जैसे हमारे पार्लियामेन्ट में कहते है कि शाह आयोग से कोई निकल नहीं सकता तो ये देवताओं का जो शाह आयोग है इससे कोई निकल नहीं सकता ये समझ लीजिए। इसको अच्छी तरह से। बहुत ध्यान के साथ में। मैं सीधी और मोटी बातें आपके समक्ष रखता हूं जोकि नेता जी ने जो यहाँ मुझसे कहा कि आप कह दीजिए तो मैं अपना पद छोड़ दूं।

काम तो अन्तिम स्वांस तक करना है

मैने कहा ऐसा नहीं हो सकता है। यह काम आपको करना होगा। अन्तिम पांच साल तक अन्तिम सांस तक अन्तिम दिन तक इस

Scanned with CamScanner

काम को करो। जो काम की कमी हो। हम तो नेता जी से कहते हैं कि अगर कोई जनता पार्टी को तोड़ता हो तो बाबा जी से बता दे बाबा जी छोड़ देंगे भूत। और फिर देखिए की क्या होता है ? तब आपको पता चलेगा। और यह आप को बता दूँगा की मेरे भूत ने क्या किया।

अभी क्या आदमी देखा आदमी तो आगे आयेगा

लेकिन ये जरूर है कि जहां-जहां मेरा व्याख्यान हो वहां जरूर अखबारों पर हमारे प्रतिनिधि दे दें। हमारे देश के अन्दर कोई बच्चा इस काम से छूटा नहीं रह जायेगा। जो लोगों को मालुम न हो जाय। वैसे तो मैं इतना संदेशा पहुंचा दूँगा। क्योंकि मैंने तो पहले से ही कह दिया था कि इतना आदमी आ जायेगा बाबा जी के शिकन्जे में जम्बूरे में आ जायेगा तो वह इतना बड़ा काम करेगा कि उसकी जबान ही अखबार उसकी जबान ही रेडियो बन जायेगें। और जब १० करोड़ आदमी तैयार हो जायेगें। और बाबा जी के जब १० करोड़ आदमी और २० करोड़ आंखें और २० करोड़ हाथ, और २० करोड़ पैर सब जब काम करने लगेंगे तो जमीन आसमान उड़ने लगेगा। इनको सोचना भी पड़ेगा। इसमें दो बातें नहीं है।

पूजन विधिवत हुआ

जब यहां पर सरकस लगा हुआ था तो मैं यहां आया। आकर के यहां जमीन का पूजन किया। हमारे बिट्ठल भाई अचानक खड़े हुए। कहा बैठो। चलो। उनकी देवी से कहा बैठो। अपने शहर में बोलने की किसी को जरूरत नहीं। बस ऐसा जल छोड़ा। बैठ जाओ यहाँ पर। और बैठ गये। जमीन का लक्ष्मी और देवी के साथ पूजन करा दिया। और ये कहा कि इतनी शुद्धि के साथ पूजन हुआ है कि ये काम सफल हो जायेगा और बड़े बड़े यहां पर आये कि ये कैसे हो सकता है ? हमने कहा कि २ तारीख से ११ तारीख तक मैदान में आकर के आप देख लीजिएगा। यानी ९ दिनों के अन्दर इस मैदान में क्या हो जायेगा। अरे ये क्या चीज है कुछ नहीं। ये तो आप जब हमारे सतयुग का प्रादुर्भाव का जब आप देखेंगे कि मैदान। ऐसे काम ५० पैसे का काम है। जब १००० पैसे का काम होगा तब हम देश के नेताओं से कहेंगे कि अबकी बार आप यातायात के सामान में चूक गये लेकिन अब मत चूको। चलो। श्रेय प्राप्त कर लो। बाबा जी को कुछ नहीं। हम तो यह समझते हैं कि ये अभी जानते नही है। नये आये हैं।

नया होने से समझ नहीं पाये

हम तो ये जानते हैं कि रेल मंत्री नये थे। स्वास्थ्य मंत्री नये थे। और मतलब ये सभी मंत्री नये थे। और अभी हमारे अटल विहारी बाजपेई जी ने कहा कि मंत्री वोन्त्री की तो बात छोड़ दोजिए हम तो चपरासी भी नहीं थे। यानी अभी सब नये। तो नये लोगों को क्षमा करो। इन्हें क्षमा करो। सीख लेने दो। जान लेने दो। समझ लेने दो। हम जानते हैं आप को कष्ट हुआ लेकिन जब मैदान में आ गये तो आपको कोई कष्ट नहीं। सारा कष्ट यहां आने पर खतम। और जब फिर वापस जाओगे उधर तो थोड़ा बहुत कष्ट होगा वह भी खतम।

उस समय सबको आनन्द रहेगा

तो यहां भी हंसोगे और वहां भी हंसोगे। और फिर क्या पूछना है। जब सब नर-नारी स्वागत तैयारियों में जब लग जायेंगे तो वह कैसा आनन्द होगा स्वागत ढिढोरे के पीटने का। जब स्वागत आयेगा तब तो वर्षा की तरह से यानी बरसात होगी आनन्द की।

सब ने अच्छा काम किया

बहुत अच्छा है। मैंने संक्षेप में आप की बातें

बताईं मिल जुल कर हम सबको काम करना है। दिल्ली वाले अपना काम करें। अहमदाबाद वाले अपना काम करें। मैं कोई मुख्य मंत्री अहमदाबाद को कुछ बुरा नहीं कहता उन्होंने जो कुछ भी हमारे साथ किया है। वह बहुत अच्छा किया है भविष्य में भी आप ऐसा करते रहेंगे। बहुत अच्छा किया। हम किसी को कुछ नहीं कहते। जिलाधिकारियों ने जो कुछ भी काम किया है, बहुत अच्छा किया है कोई बात उसमें नहीं। अधिकारी अपनी जगह और अहमदाबाद के बड़े लोग अपनी जगह। हम किसी की कोई बात नहीं करते। हमारा तो ध्यान और लक्ष्य तैंतीस करोड़ देवताओं के प्रस्ताव पर है। इन्द्रया कुछ नहीं।

मैं पढ़ा लिखा नहीं पर सब रोने लगे

हम न दिल्ली वालों को कुछ कहते हैं न यहां वालों को लेकिन नेता जी से यह जरूर बताना चाहते हैं कि मैं जेल में कभी बोला नहीं मुझको सभी लोग यह कहते थे कि यह कुछ नहीं जानता। इसको कुछ आता ही नहीं। अरे मैंने तो पहले बता दिया कि मुझे कुछ नहीं आता। मैं तो एक निरक्षर भट्टाचार्य आदमी हूँ। मुझे कुछ नहीं मालुम। लेकिन जब बरेली में १० मिनट बोला तो सबको रुला दिया और ये कहा कि ये जो रखा हुआ है यही दिल्ली की गद्दी पर बैठेगा जिसका साफ और स्पष्ट कह दिया।

सत्यता प्रकाश करती है

तो बड़े ध्यान से आप इन बातों को सोचें कि जानता बूझता तो कुछ नहीं हूं। इसमें कोई बात नहीं। लेकिन ये जरूर है कि जो सत्यता होती है वह अपनी जगह। सूरज कोई ज्ञान का प्रकाश नहीं करता लेकिन वह तो एक रोशनी आपको दे देता है। इसमें आप ज्ञान का प्रकाश कीजिए। बाबा जी एक रोशनी देते हैं उसमें ज्ञान का प्रकाश होता है।

भौतिकता से आध्यात्मिकता को घटा लीजिए

बड़े ध्यान से। बाबा जी कुछ नहीं करते हैं। इसी तरह से भौतिक वस्तुओं का थोड़ा बहुत देख करके आध्यात्मिकता में घटा लीजिए। बड़ी सीधी साधी बात है। और कुछ नहीं।

देश के विकास में सब लग जांय

इसलिए इन सब बातों को सामान्य रूप से हम अपनी जगह और वह अपनी जगह। तो सब लोग लग जांय सतयुग आगवन देश के विकास के लिए और अधिकारी गण भी जो सुना करते हैं जिनको हम अपना माता पिता समझते हैं वे भी ये समझें कि ये सब बच्चे हैं हमारे। और इन बच्चो को आराम पहुचाना हमारा परम कर्तव्य है। और यदि ये बच्चे गलती करते है तो उसको दो चार तमाचे मार दें तो कोई बात नहीं। लेकिन बच्चे के साथ दुर्व्यवहार हो जायेगा तो माता पिता का प्यार न मिला तो समझ लीजिए की क्या होगा? वे माता पिता भी जब अपने बच्चों को प्यार नहीं देते हैं तो बच्चा अपने माता पिता से जुदा हो जाता है।

सब काम में लग जांय

तो अधिकारी गण और दिल्ली अहमदाबाद के प्रबन्धक सब लोग लग जाय। हम आप अच्छे काम में तो बहुत बड़ा काम। किसी को कोई डरने की जरूरत नहीं। बाबा जी इतनी जगह घूमते रहते हैं तो सत्य काम में क्या डर है? जब कोई अपना आदमी झूठ काम और खराब काम नहीं छोड़ता तो बाबा जी अपना अच्छा काम कभी छोड़ने वाले नहीं। इसलिए अच्छा काम कर लें। अच्छे काम के लिए सब लोगों को जो कुछ भी उठाना पड़ा

Scanned with CamScanner

उन्होंने उठाया है। तो उसके लिए कोई चिन्ता की बात नहीं। लेकिन अच्छा काम जरूर आता है और जरूरत इस बात की है कि देश के अन्दर।

बुखार को उठाकर रख दिया किनारे

अब आप जरा ध्यान से सुने, मेरी बात को। आप लोग जरा जल्दी मत कीजिए क्योंकि इस समय मुझे बुखार है। मुझे इस समय पर बुखार चढ़ा हुआ। और आप जरा ध्यान से। जरा जल्दी मत कीजिए। वैसे तो मैंने बुखार को यहां रख दिया कि थोड़ी देर के लिए आप इधर रहो। ताकि मैं इधर कुछ लोगों का कार्य कर लूँ। और जब अपना काम बन्द करूंगा तो बुखार को कहूंगा आ जाओ।

पिछली बार भी बुखार को अलग रख दिया था

यही गुजरात है इधर मैं अच्छा तरह अपना कार्यक्रम कर रहा था मुझे १०४° बुखार था। डाक्टरों ने थर्मामीटर लगाकर देखा। और मेरे साथ मंच पर गये। जब मैं मंच पर बैठा तो मैंने कहा कि बुखार को उठा कर इधर रखता हूं और डाक्टर साहब आप इधर खड़े रहिये। और जब मैं बोलने लगा तो तुरन्त थर्मामीटर लगा के दिखाया तो कहने लगे कुछ नहीं। और फिर कहा कि अब काम मेरा पूरा हो गया। आ जाइये। तो फिर आ गये। तो १०४° चढ़ा।

काम करते समय जरूरत होती है सबकी सेवा कर रहा हूँ

तो इसलिए जब काम करने की जरूरत होती है तो जब काम करने की जरूरत होती है तो कुछ नहीं। वैसे समझदारी से बराबर आपको सेवा सुबह से शाम तक कर रहा हूँ। मैं राष्ट्र का काम, मैं भारत का काम, सेवा का काम। मानव आत्माओं का काम, मानव प्रेम का काम। सदाचार का काम। हिन्दू-मुसलमानों के काम इसाई जैनियों के काम। छोटे-बड़ों के काम। सब के साथ ये काम करता हूँ। मैंने किसी की कोई बुराई की हो तो आप मुझे बताइये। न मैं मुसलमान की बुराई करता हूं। न मैं हिन्दू की बुराई करता हूँ। न मैं छोटों की बुराई करता हूं और न मैं हरिजनों की गरीबों की बुराई करता हूं। और न मैं जंगल वासियों की बुराई करता हूं। और न मैं दफ्तर वासियों की बुराई करता हूं। न मैं अधिकारियों की बुराई करता हूं।

कचड़ा तो साफ करना ही होगा

मैंने ये जरूर कहा कि जो कचड़ा आ गया उसको निकाल कर बाहर कर दो। कचड़ा निकालने का काम बुराई का नहीं। कचड़ा निकलने का काम धोबी का है। और धोबी इस कचड़े निकालने का। और यह काम धोबी तो करेगा। धोबी का काम सफाई का है। मुझे आप धोबी समझिये। मुझे तो बुद्धि की सफाई करनी है। आप के मन को सफाई करनी है। आपके दिल की सफाई करनी है। और आपके चित्त की और आप के अन्तःकरण की। और आप के आत्मा को सफाई करनी है। बाबा जी तो एक सफाई करने का चाहे आप धोबी समझिये बाबा जी तो किसी की बुराई के चक्कर में नहीं है।

सबके हृदय में एक हिलोर पैदा हुई

इसलिए गुजरात की समूचा जनता के यानी अन्दर दिल दिमाग में एक हिलोर पैदा हो गयी। ये क्या हो गया? हो कुछ नहीं गया है। ये सब कुछ है। जो होना है वही हो रहा है। मैंने कुछ नया काम नहीं किया है।

कृष्ण भगवान को आप ने चुरा लिया था

कृष्ण भगवान कितने यदुवंशियों को लाये थे। हम तो अभी कुछ नहीं लाये हैं। लेकिन

Scanned with CamScanner

दोबारा यदि आ गये तो देखियेगा आप। यदि दुबारा फिर भूल भटक के आ गये तो फिर देखिएगा और कृष्ण भगवान को तो आप ने चुरा लिया था। आप लोगों ने द्वारिका में ले जाकर भेंट में रक्खा। इधर नहीं जाने दिया। और हम आप की चोरी करेंगे। हम आप को चुरायेंगे।

मैं आप की चोरी करूंगा

आप हमारी चोरी नहीं कर सकते। हम आप की चोरी करेंगे। और ऐसी चोरी करेंगे को जब १००० पैसा काम होगा तब मैं बताऊंगा कि देखिए मैंने आप की चोरी कर ली कि नहीं। और ऐसी पुड़िया बांध दी है गुजरात में कि मेरी पुड़िया छूटने वाली नहीं। मैंने आप की दवा साबरमती नदी में तैयार कर दी है। वह ऐसी जड़ी है जो आप का पीठ में बांध दी गयी। कपड़ा उतारने पर, साबुन लगाने पर नंगा होने पर भी बाबा जी की पुड़िया छूटने वाली नहीं।

सेवा करने का मौका दें

इसलिए आप सब लोग सावधानी से रहें देशहित में रहें समाजहित में रहें और देश के लोगों का काम करने का अवसर दें। कोई छेड़ छाड़ करने की बात नहीं। देखो रेल हो बस हो। हवाई जहाज हो। या कोई यातायात की सड़क हो। कोई चीज हो। अगर आप वास्तव में सच्चे भारतवासी, सच्चे भारत के नागरिक और सच्चे प्रजातन्त्र के मानने वाले अगर हैं तो भारत का हर कण हमारा है। और हमारे काम आता है। और उसकी रक्षा को करने का काम हमारा परम कर्त्तव्य है। अगर ये चीजें ? हममें सबमें आ जायं तो आत्मा के जगाने में क्या देर लगती है ? कुछ नहीं।

आप पद को न छोड़ें

तो मैं ज्यादा कुछ नहीं बोलूंगा और मैं विट्ठल भाई की तो बात छोड़ दीजिए। मैं अपने नेता जी से खुद कहूँगा, प्रेम के साथ। और यही नहीं कि आप घबड़ायें नहीं। अपने पद को छोड़े नहीं। गद्दी पर रहें। घर में दो चार बातें तो होई जाती हैं पति पत्नी में।

यह आपसी झगड़े हैं

तो पति और पत्नी को समझ करके दो चार बातें नेता जी सहन कीजिएगा। भाई जब चार होते हैं तो आप जानते हैं बहुओं में रोज एक न एक बात खड़ी होती है कि हमें धोती नहीं मिली। तो हमको ये लाल ब्लाऊज नहीं मिला। तो उसको सोने की चूड़ी पहना दी।

तो यही दिल्ली में बैठ करके होता है। हमको यह नहीं दिया,। हमको वह पद नहीं दिया। हमको यह गद्दी नहीं दी। हमको वह विभाग नहीं दिया हमको वह बँगला नहीं दिया।

हमारा आप से प्रेम है

तो इस चक्कर में मत पड़िए। यह तो ऐसे चलता ही रहता है। थोड़े दिन तक ऐसा चलेगा। उसमें घबड़ाने की बात नहीं है। और बाबा जी का आपके साथ में पूरा प्रेम है। इसको आप समझिए। बाबा जी के प्रेम को याद रखिए और ऐसा प्रेम नहीं। आप तो कहते हो थोड़ा मौका दीजिए, सेवा करने का। और मैं यह आपको सिद्ध कर दूँगा, कि आपने तो कम कहा था। लेकिन भारत की जनता ने आपको दूना मौका दिया सेवा करने का। और इस पर भी अगर आप सेवा न कर सके ? तब फिर क्या होगा ?

तो इसलिए मैं अनुरोध करूंगा प्रेम के साथ मे। और पीछे दो चार बात कुछ कहूंगा। तो आप अच्छी तरह से प्रेम से बैठे रहिए।

इधर भी ठीक करना उधर भी ले चलना है

हमने कल कहा था कि किसी की कोई बात हो आप सुनिए, मैं ऊपर की तरफ ले चलूँगा आप घबड़ाइए नहीं। ऊपर के मंदिरों में ऊपर

Scanned with CamScanner

के ब्रह्माण्डों में क्या हो रहा उधर आपको ले चलूँगा। आप फिकर न करें जरा मुझे सामान सब तैयार कर लेने दें "फिर आने में क्या देर लगती है। जब भगवान की कृपा होती है तब अलक के पलक में। अरे अलक से पलक में छुपा हुआ सारा राज आपके सामने प्रकट हो जाएगा। तो किसी की भी दो बातें आप सुनिये और मैं नेता जी से भी अनुरोध करूंगा कि जितनी जरूरी चीजे हों।

चुन कर कुछ कह दें

उतना ही वे उनके सामने भर दें। ज्यादा कहने की कोई जरूरत नहीं। बस ऐसी बातें चुन कर रख दीजिए जो इनके दिल में समा जाय।

[इसके बाद नेता जी श्री राज नारायण सिंह का परमार्थ की सीख का, बाबा जयगुरुदेव की शिक्षाओं को दुहराने और याद दिलाने वाला भाषण हुआ। अन्त में बाबा जी ने पुनः निम्न बातें कहीं।]

हाँ बच्चों, बोलो जयगुरुदेव। [सबने दिग् दिगन्त को गुंजा देने वाली ध्वनि में कहा जयगुरुदेव। फिर स्वामी जी ने कहा]

सब लोग खड़े हो जाओ। बच्चों, कोई बोलो नहीं। जय गुरुदेव।

[सबने ध्वनि की जयगुरुदेव।]

जितने आगे हैं उतने पीछे भी हैं

आप सबके सब नहीं बोलेंगे। पीछे की ओर टेन्टों के जो लोग हैं वे बोलेंगे। बोलो सबके सब पीछे वाले जयगुरुदेव।

[उतनी तेज ध्वनि पुनः हुई जयगुरुदेव।]

आप लोग मत बोलिये सामने के। पीछे के लोग बोलेंगे। जयगुरुदेव।

[वैसी ही तुमुल ध्वनि हुई जयगुरुदेव।]

बहुत आदमी पीछे। और आगे भी हैं। जयगुरुदेव।

[बहुत तेज आवाज हुई। जयगुरुदेव।]

देश में अब स्त्री प्रधान मन्त्री नहीं हो सकती

देखिये, बड़ी सीधी सादी बात सुन लीजिए। अभी तो अच्छी बात आपके सामने आई। जिन्होंने भारत में, भारत की आजादी को समाप्त कर दिया और सारे देश में एक विप्लव का सामान तैयार कर दिया। यह बात तो आपके सामने इमरजेन्सी में आ चुकी थी। लेकिन अब आप सबके सब बड़े ध्यान से सुन लें, जो देवताओं की इस पार्लियामेन्ट में प्रस्ताव पास हुआ है वह यह हुआ है कि प्रजातन्त्र में भविष्य में नारी प्रधान मन्त्री नहीं बनेगी। अब नेता जी को यह बात समझ लेनी चाहिये कि वह चाहे विप्लव करायें, चाहे मुसलमान लड़ायें चाहे हिन्दू लड़ायें। यह थोड़े दिन का समय आपको पार करना है। हम सबको मिलकर के। और इसके बाद यह घटना जो आप सबके सामने विद्यमान रही परिवर्तन हो गया। अब आगे दूसरा परिवर्तन होने वाला है।

आगे तमाचा और लगेगा

एक तमाचा आप सो रहे थे लगा। उठके बैठ गये नींद आ रही। दूसरा तमाचा और लगने वाला है। और जब तीसरा तमाचा लगेगा तो आपको ध्यान हो जायेगा। आप धीरज रक्खें। घबरायें नहीं। १० करोड़ आदमियों का बाबा जो सारे देश में जागरण करके एक सूत्र में बाँधे देते हैं। वे बाबा जी के फालोवर होंगे।

१० करोड़ के सामने कौन टिकेगा

१० करोड़ आदमी जब देश में प्रचार के लिए निकलेंगे तो इनके सामने कौन-सी हस्ती होगी जो टिकेगी?

बालुका के भभूत का असर

बस इतनी ही बात। सब लोग इस

सावतमती की बालू को जब भी आज से जाना प्रारम्भ करें ले जांय और अपने अपने खेतों में और समय समय पर इससे काम लें आपके क्षेत्र में डाली हुई बालू। ५० मील तक उसका असर होगा।

सतयुग आगवन के संकेत

यह सतयुग आगवन के संकेत आप को बता रहा हूँ। जो सतयुग आयेगा तो एक बीघा खेत में १०० मन और १ एकड़ खेत में डेढ़ सौ मन गेहूँ पैदा होगा। जिन पेड़ों पर फल नहीं लगते उन पेड़ों पर फल लगने लगेंगे। जो जंगलो में ८० फीसदी आदिवासी रहते हैं उन सबको कपड़ा और भोजन नियमित रूप से विधिवत मिलेगा।

यह ये जल, पृथ्वी, वायु, आकाश देवता और तैतीस करोड़ देवताओं ने रात्रि में पास कर दिया।

हम कर्म करने में आजाद हैं

कैसे होगा? यह हमको आजादी मिली है कर्म करने की और कृपा की उसको आजादी है। कर्म करने की हमको आजादी है। हम निमित्त मात्र हो जायेंगे। कृपा उनकी हो जायेगी। सब काम हो जायेगा। सीधी सादी बात। कोई ऐसी बात नहीं। अब आप सबसे बिदा लेता हूँ। जो नर-नारी आये हुये हैं वे आज से जाना प्रारम्भ कर दें। हमारा काय पूरा हो गया है। सम्पन्न हो गया विधिवत। ऐसा ५ हजार वर्ष के अन्दर नहीं हुआ है। और देवता सुबह प्रातः काल बिदा कर दिये जायेंगे। सब के सब अपने स्थानों को जायेंगे।

बड़े ध्यान से। जो वे १ हजार प्रस्ताव पास किये है और दस्तखत कर दिये हैं। मैंने थोड़े से आप को बता दिये हैं और सब छिपा के रखा है। वह समय समय पर हम आप को जैसी जरूरत और आदेश होगा वैसा बतायेंगे।

नेता जी गाड़ी का प्रबन्ध करायें

अब मैं नेता जी से अनुरोध करुंगा कि वे दिल्ली कल शायद जांय। और इनके जाने का प्रबन्ध। क्योंकि मैं यह नहीं सुनना चाहता हूं कि रेल मन्त्री ने क्या किया और उसने क्या किया उस जगह पर है। यह प्रबन्ध होना चाहिए। मैं कुछ नहीं सुनना चाहता हूँ इन सब बातों को। रेल लगनी चाहिये। डिब्बा लगना चाहिये। यात्री यहां से अहमदाबाद से रवाना होना चाहिये। यह मैं नेता जी से कह रहा हूँ। और इस काम को जो अभी बताया है जनता जनार्दन का यह करना चाहिये। यह नेता जी की जिम्मेदारी है।

जयगुरुदेव।

[इसके बाद विट्ठल भाई ने कहा कि यज्ञ की पूर्णाहुति हुई है। अब हम गुजरात की जनता की तरफ से स्वामी जी को माल्यार्पण करते हैं।]

—:※:—

गुरू पूर्णिमा

इस वर्ष पावन पर्व गुरुपूर्णिमा २२ जुलाई को पड़ रही है। अभी यह सूचना नहीं मिली है कि परम पूज्य स्वामी जी महराज गुरुपूर्णिमा का विशेष सतसंग कहां करेंगे। किन्तु यह पूरी आशा है कि यह हर वर्ष की भांति गोरखपुर में सम्पन्न होगा।

Scanned with CamScanner

महा यज्ञ सम्पन्न हो गया

(साकेत महायज्ञ अहमदाबाद दि० ४-१-७८ दिन में १२-३० का सतसंग)

यहां इतनी जनता जनार्दन इकट्ठा हुई है। जहां जनसमूह होगा वहां भगवान निवास करते हैं। तैंतीस करोड़ देवताओं का यहां पर निवास है और वह २५-१२-७७ से आपके साबरमती नदी में यहां आकर सम्मान पूर्ण सतयुग दर्शन पर विराजमान हैं। इनमें यज्ञशालाओं में रहते हैं और जब यज्ञ शालाओं का कार्य यज्ञ का समाप्त होता है। शाम को तो वह सतयुग दर्शन को चले जाते हैं। और आज रात्रि को भी वे यहाँ रहेंगे। कल उनकी विदाई होगी। अपने-अपने स्थानों पर चले जायेंगे। जिस तरह आवाह्न कर उनको बुलाया गया और सतयुग आगवन के ढिंढोरे को जो पीटा गया उसको स्वीकार कर लिया।

प्रार्थना स्वीकार हो गई

बाबा जी की प्रार्थना और परमात्मा ने भी। जो प्रार्थना की वह उनकी कृपा हो गई। इस तरह मानव सृष्टि के लिए एक बहुत बड़ी इस समय पर देवताओं की सभाओं में जो प्रस्ताव पास हुआ है वह बहुत ही बड़ी दया भगवान की हुई। ऐसी दया का अपरम्पार वर्णन नहीं हो सकता है जो उन्होंने इस समय पर कृपा की।

सब प्रेम विभोर में भूल गये

नर नारियों का जो प्रेम स्रोत बह चला। एक हवा आई उसमें सभी विभोर हो गये। और लोगों को यह ज्ञान नहीं रहा कि कौन पति और कौन पत्नी है। यानी स्त्री पुरुष का कोई भेदभाव नहीं। किसी को भी मना किया जाय कि आदमी बैठे हैं बच्चियों, तुम जरा दूर रहो। उनको यह ज्ञान नहीं कि ये आदमी हैं। आदमियों से कहा जाय कि बहनें और माताएं बैठी हैं तो उनको कोई ज्ञान नहीं। इस समय पर सब लोग अपने-अपने उस प्रेम विभोर में भूल गये। ये सतयुग आगवन साकेत महायज्ञ जो भारतवर्ष में इस समय पर हुआ है यह पाँच हजार वर्ष के अन्तर्गत नहीं हुआ।

मानव खुशहाली का यज्ञ पूर्ण हुआ

ऐसी महान प्रभु ने कृपा की कि निर्विघ्न, सरल इसको उन्होंने देवताओं ने अपनी सभा कर प्रस्ताव पास कर दिया। और यह कहा कि यज्ञ सम्पन्न विधिवत पूर्ण हो गया। और जिस उद्देश्य के लिए यह यज्ञ भारत में मानव खुशहाली और मानव आराम, शान्ति और मानव आत्म कल्याण के लिए वह देवताओं ने प्रस्ताव पास कर दिया। बहुत बड़ी कृपा उनकी हुई। मैं तो कहता हूं कि भक्त जन जब कभी पृथ्वी पर आते हैं और भगवान देवताओं से मानव के लिए प्रार्थना करते हैं तो उनकी प्रार्थना कभी न कभी मानी जाती है।

सबका सौभाग्य है

ऐसा साबरमती का सौभाग्य और गुजरात

Scanned with CamScanner

के नर-नारियों का यह परम लाभ जो सतयुग आगवन साकेत महायज्ञ में सामान्य सबको लाभ। जो भी यहां पर आया। ऐसा वितरण देवताओं ने प्रस्ताव पास किया कि सबको लाभ। जो यहां पर उपस्थित हैं सबको बराबर मिलेगा कोई भी इस लाभ से किसान छोटा बड़ा, किसी तरह से खाली नहीं जा सकता है। इस प्रकार का प्रस्ताव तैंतीस करोड़ देवताओं ने पास कर दिया।

यही बाबा जी की इच्छा थी

बाबा जी की यही इच्छा थी कि सर्व मानव को, कोई भी हो, उसको लाभ होना चाहिए। इसमें भेदभाव वाली बात नहीं होनी चाहिए। कोई पापी हो, कोई पुण्यात्मा हो। कोई कुछ हो कोई कुछ हो। तो बाबा जी की मानव के लिए यानी प्रार्थना सर्व सम्मति से देवताओं ने पास कर दी। और आप किसी प्रकार की भी चिन्ता मत करें।

बालुका का असर

आप यहां की जो रज है, यहां की जो बालुका है, यहां की जो मिट्टी है, ये इतनी शुद्ध और पवित्र कर दी गई कि इसके जो जहां जहां लोग ले जाकर अपने अपने प्रान्तों और खेतों और घरों में इसको ले जाकर काम में लगे। ये तो बालुका सिद्ध है। यानी पका ली गई। सिद्ध कर ली गई। इसमें शक्ति का प्रादुभाव इस बालू में हो गया भगवान की कृपा इस बालू पर हो गई। और इस बालू के कण में रतन और जवाहरात की शक्ति प्रवेश हो गई। देवताओं के समक्ष और देवताओं ने इस प्रस्ताव को पास कर दिया।

कार्य सम्पन्न हो गया

ये हम सबको कितना आनन्द और कितनी खुशी का ये आज दिन चल रहा और जो २५-१२-७७ से यह कार्य हो रहा था और आज ४ जनवरी है। मैंने ५ जनवरी के लिए आपको कहा था। कि ४ जनवरी को पूर्ण आहुति और ५ जनवरी को प्रातः काल देवताओं की बिदाई।

आप क्या करें

कार्य ५ ता० तक रखा गया था पर ऐसा कार्य देश के अन्दर आया किसानों से अनुरोध करूंगा कि वे यहां के बालुका के कण अपने गांवों में पठा कर ले जायेंगे अपने-अपने खेतों में बीज के साथ मिलाकर। बड़े ध्यान से सुनें।

जयगुरुदेव नाम की महिमा

जयगुरुदेव नाम क्या है। जयगुरुदेव नाम कोई आदमी का नाम नहीं। जयगुरुदेव नाम कोई आसमान और जमीन और पानी का नाम नहीं। और जयगुरुदेव कोई जनम मरण का नहीं। जयगुरुदेव कोई अन्धा बहरा नहीं होता। जयगुरुदेव कोई इस प्रकार का राजगद्दी नहीं करता। वह जयगुरुदेव जो परम पिता सारी आत्माओं जीवात्माओं का स्वामी मालिक है, उसका नाम जयगुरुदेव।

नाम की परीक्षा

आप लोग जयगुरुदेव नाम की परीक्षा करना चाहे तो यदि कोई आदमी बीमार हो जाये और बेहोश हो गया। आप ने बहुत उसको दवा दी और वह होश में नहीं आया और आप की दवायें व्यर्थ और बेकार हो गयी तो उस समय परीक्षा के लिए क्या करना? कि उसके कानों पर अपने मुँह को लगा कर और उससे कहना कि तुम जयगुरुदेव भगवान का नाम बोलो। जयगुरुदेव भगवान का नाम बोलो। सात आठ बार उस बेहोश आदमी के कान पर जब आप जयगुरुदेव नाम का उच्चारण करेंगे तो आप उसकी जीभ को देखियेगा कि जीभ हिलाता हुआ धीरे-धीरे जयगुरुदेव-जयगुरुदेव करता हुआ आंख को भी खोल देगा। तब आप

Scanned with CamScanner

उससे बात कर लेना। और जब वह आंख खोल दे और बात कर लेना। रहने वाला होगा तब तो फिर आंख बन्द नहीं करेगा। और जाने वाला होगा तो तैयार उसको ले जाने के लिए लोग खड़े होंगे। फौरन आंख बन्द करेगा। दो मिनट बात करना आंख बन्द करेगा और वह लेने वाले उसको ले करके चले जायेंगे। ये शरीर पड़ा रहेगा इसको जहां चाहे आप जला देना।

छोटी मोटी परीक्षा तो होती ही रहती है

ये जयगुरुदेव नाम की परीक्षा छोटी मोटी बात नहीं बड़ी से बड़ी बात पर आप करके देखना। और छोटी मोटी चीजों पर तो होती ही रहती है। ये तो कोई बड़ी बात नहीं है।

जयगुरुदेव सिद्ध और जगाया नाम है

इसलिए जयगुरुदेव नाम सिद्ध और जगाया हुआ और यह उस परम पिता ने आदेश दिया कि यह सतयुगी नाम है और जब सतयुग आयेगा उसमें नाम सारे देश में मानव मानव को आत्माओं को लाभ करेगा। फायदा करेगा कल्याण करेगा। शक्ति देगा। प्रेम देगा। और इसको स्वर्ग में बैकुंठ में, ब्रह्म लोक में पहुँचायेगा। जयगुरुदेव नाम किसी आदमी का नहीं उस परम पिता परमात्मा का नाम है।

हम सब बड़े भाग्य शाली हैं

तो हम सब गुजरात वासी नर–नारी आये हुए सभी नर नारी देश के प्रान्तों के बड़े भाग्य–शाली हैं जो दूर से चलकर अपना अपना समय अपने अपने घर के काम काम को।

खेतों में पानी बरसा कर कितना रुपया बचा दिया

तुम लोग यह सोच रहे थे कि बाबा जी के यहां चलेंगे। हमारे खेतों में पानी नहीं है। हमारे खेत सूख जायेंगे। आप को पता है कि जिधर से आप आये हो उधर कितनी बारिस, खेतों में कितना पानी मिला। आपने रुपये तो खर्च किये होंगे लेकिन खेत में जो हजार रुपये का पानी देते हो उसकी तो बचत हो गई।

दुनिया तथा धर्म दोनों को कमाया।

धर्म भी कमाया। कर्म भी कमाया और धन भी बच गया। दोनों काम हो गये। जायदाद भी कमाया और धर्म भी कमा लिया। और भागीदार भी बन गये। सतयुग हिंडोरे में भी शामिल हो गये। उसका श्रेय भी प्राप्त कर लिया। और आत्माओं का सामूहिक जो कुछ मिलना था वह भी सतयुग आगवन साकेत महायज्ञ में मिला। और लाभ भी हुआ भौतिक और अध्यात्मिक।

बड़ा लाभ मिलता है

तो भगवान के नाम में और भगवान के भजन में और महात्माओं की आज्ञा के पालन करने में कितना बड़ा लाभ होता है। इसको कोई नहीं जानता है।

ये पहले से ही पढ़े पढ़ाये हैं

हम देखते क्या हैं इस समय। हमको बड़ा आश्चर्य होता है। जब हम देवियों को। पता नहीं कहां से इनको पाठ मिल जाता है पढ़ने का। हमारे समझ में नहीं आता। यह तो हमारे प्रेमी पढ़ते के पढ़े पढ़ाये हैं। यह अपने तन को मन को सबको पहले से कुर्बान कर चुके। तो बाबा जी का कुछ न कुछ, कुछ न कुछ। कुछ न कुछ पढ़ाते रहते हैं। मैंने आज क्या देखा कि गुजरात का नर नारियों ने तो कमाल कर दिया। आफत कर दी। यानी क्या इनको किसने पढ़ा दिया? इनको किसी ने कुछ नहीं कहा कि बाबा जी। बाबा जी को तो कुछ इच्छा नहीं। अनिच्छा में बैठे हुये हैं। इच्छा उधर की है कि उधर चलो। सब अपनी आत्माओं को पहुँचाओ। बाबाजी की कामना आपके लिए यह है। और बाकी तमाशा होशियारी के साथ इस बाजार का देख लो।

Scanned with CamScanner

बाजार का तमाशा देखो मगर उसमें फंसो नहीं

बाजार है देख लो। सुन लो और काम में ले लो। लेकिन बाजार के तमाशे में जो हमने लगाया उसमें फंसना नहीं। अपने लगाये हुये तमाशे में यदि तुम फंस गये तो समझ लो कि अपने भगवान को भूल जाओगे। और आत्मा को भी भूल जाओगे। तो क्या हो जायेगा पतन। गिर जाओगे। गड्ढे में चले जाओगे। फिर यह मनुष्य रूपी अनमोल किराये का मकान भगवान को पाने के लिए नहीं मिलेगा। आज यह मिल गया है भगवान को पाने के लिए। बहुत बड़े भाग्य शाली हो। इस सन्देश को सुनने के लिए आ गये।

आपको बाबा अच्छे लगते हैं

आप को परिक्रमा यज्ञ शालाओं का अच्छी नहीं लगती। हम देखते हैं बाबा जी की बात अच्छी लगती है। परिक्रमा अच्छा नहीं लगती। रोज कहते हैं ३३ करोड़ देवता उपस्थित हैं। तुम जिनको चाहो उनको खुश कर लो प्रसन्न कर लो। हम तुम दोनों प्रार्थना करें और देवताओं को अपने सुख और अपने सामान के लिए प्रसन्न कर लें। लेकिन वह भी आप को अच्छा नहीं लगता हम तो बाबा जी की तरफ जायेंगे।

एकै साधे सब सधे

ठीक है। कोई हर्जा नहीं। जाना तो भगवान की तरफ है।

एक ही साधे सब सधे और सब साधे सब जाय। एक को साध लिया तो सब हाथ में आ गये। और सबको पकड़ने लगे तो सब निकल गये। होता क्या है कि जब हमारा वक्त आता है तभी हम किसी देवता को मानते हैं। कभी किसी देवता को मानते हैं। कभी किसी देवता को मानते हैं। जब मौत का वक्त आता है तो वह बचायेगा। वह कहता है कि वह बचायेगा और कोई नहीं आता।

सबसे मांगने से नहीं मिलता

एक पत्नी का एक पति हो तो उसकी देख भाल करेगा और एक पत्नी के कई एक पति हो गये तो कौन देखभाल करेगा। हम लोग क्या करते हैं कि कभी किसी से मांगते हैं और कभी किसी से मांगते हैं। जब मुसीबत पड़ती है तो कोई काम नहीं आता। तो मनुष्य अपना विश्वास खो बैठता है। इसलिए एक ही साधे सबको साध लिया। सब हाथ में आ जायेंगे। और एक निकल गया तो कोई हाथ में नहीं आना यह तो बात आपको समझनी है कि प्रार्थना कर, आह्वान कर तेंतीस करोड़ देवताओं को यहां पर सम्मान पूर्वक आपके लिये उपस्थित किया। जब प्रार्थना करने पर ३३ करोड़ देवता उपस्थित हो सकते हैं—तो और भी कुछ प्राथना करने पर हो सकता है। यह कितनी बड़ी अमोलक चीज है और कितना बड़ा अमोलक ज्ञान है हम सब लोग इसको भूल गये।

सभी बाजे तुम्हारे भीतर बज रहे हैं

तो नर नारी! दिन में काम शाम को बच्चों की सेवा—१५ मिनट १० मिनट ये क्या है? यह भगवान का बनाया हुआ मंदिर है। तुमने देखा है रात्रि को बड़ गेट? उस पर क्या क्या बाजे बजते हैं? वे सारे बाजे तुम्हारे यहां बज रहे हैं। मैं तुमको रास्ता बता दूँ—और ये सब बाजे जो गेट पर आपको दिखाई देते हैं—ये सबके सब इसमें बजने लगेंगे। यह भगवान का बनाया सच्चा मंदिर है और चौबीसों घंटे वहां आरती कीर्तन हो रहा है। वहां दीया बत्ती जलाने की कोई जरूरत नहीं। वह इधर बोल रहा है लेकिन तुमने भगवान के कीर्तन को सुनने के लिये श्रवण नहीं खोला। अपने कानों को बंद कर डाला। द्वार खोलोगे तभी कीर्तन सुनाई पड़ेगा।

Scanned with CamScanner

और आंख खोलोगे तो दिखाई देगा।

महात्मा आंख कान खोलते हैं

हमने आंख भी बंद की और कान भी बंद किये। महात्माओं के पास जांय, इसका साबुन लें और हम अपनी सफाई करें–वहां कान खुल जाय तो ये भगवान का बनाया हुआ मन्दिर है। और उसमें चौबीसों घंटे भगवान कीर्तन करता रहता है। कभी भी उसका कीर्तन बंद नही होता जो उपका आनन्द का कीर्तन होता है उसको सुनकर तुम कितने मगन मस्त हो जाओगे। दुनिया को लोग भूल गये उस आनन्द और मगन मस्ती को पाकर तो उस कीर्तन को सुनकर राजपाट छोड़ दिया। बहुत से जंगल को चल दिये। राम का जब तिलक होने जा रहा था तो छोड़ दिये राजगद्दी कृष्ण भगवान ने तो राज किया ही नहीं।

हरि द्वारा यानी हरि का सच्चा द्वार यहां हैं

ये कीर्तन हो रहा आनन्द मंगल का। भगवान का बनाया हुआ यह मंदिर है। इस पौड़ी पर जाओ हरि की। हरि दरवाजे पर यानी हरिद्वार"–हरी का द्वार उस द्वार पर जीवात्मा को बैठाल दो तो भवसागर रूपी नदी से पार। तो हरी का कीर्तन सुनाई देने लग जायगा। तो वह बड़े भागशाली हैं। आपको यह भी असोलक रास्ता आपको मिल रहा है। और इतना ऊंचा भगवत सन्देश मिल रहा।

सतयुग का ढिंढोरा शुरू हो गया

"सतयुग आगवन"–देवताओं की प्रार्थना स्वीकार हो गई सतयुग ढिंढारा स्वागत तैय्यारियों का शुरू हो गया–आगे आने वाले समय के सम्बन्ध में जानकारी आपको हो ही जायेगी। तो यह परम सौभाग्य हम सब लोगों का है कि विधिवत ये काय यहां साबरमती नदी में सम्पूर्ण हुआ।

शुरू से लोग कहते थे कैसे होगा

मैं यहां पर जब आया तो लोग कहते थे कि यह कैसे कार्य हो सकता है? तो मैंने उनसे ये कहा–आप ९ दिन में आके देखिये तो आपको पता चल जायेगा। पिछले महीने में २ तारीख से ११ तारीख तक जो यहां प्रेमियों ने सेवा की और जो काम करके दिखा दिया वह बड़ा आश्चर्य जनक लोगों को मालूम हुआ। लेकिन क्या हो। यह तो कुछ नहीं हुआ। यह तो ईश्वर की कला है। यह तो भगवान की दया है। यह आदमी की बात बिल्कुल नहीं है।

संकल्प पूरा होता है

संकल्प होता है उसका–और काम होता है आप द्वारा। और श्रेय किसको मिलता है? आप को। सुदर्शन चक्र चलाया कृष्ण भगवान ने। बड़े बड़े वीर योद्धाओं को १८ दिन में मार दिया। लेकिन श्रेय किसको मिला? पांडवों को कि तुमने मारा मारा कृष्ण ने-सुदर्शन चक्र ने–तो श्रेय आपको मिला। काम किया भगवान ने वह करता है–अच्छे काम के लिये समय आने पर सब शक्तियां सारे देवता सारे मनुष्य प्रयत्न करने लगते हैं।

पूर्ण भाव में बिताये

तो आज यह परम सौभाग्य है कि हम लोग इस सतयुग साकेत महायज्ञ में बहुत ही पूर्ण सद्भाव से आज का दिन बिताये क्योंकि देवता उपस्थित हैं और लग गये आप के पीछे तो न मालूम क्या क्या कर देंगे। इस तरह उनके प्रस्ताव में पास हो गया है।

अपनी आंख से दिखाई देगा

तो उनको समझ कर समझे तो मैं जानता हूं कि तुम्हारी आंख बंद है। लेकिन जब आंख तुम्हारी खुल जायेगी और देवताओं को अपनी आंख से देखोगे तो स्वयं कहने लगोगे कि आप

बिल्कुल सत्य कहते हो। इस तरह हमारी आंख बंद है और देवताओं को नहीं देख सकती। लेकिन अब हमारी आंख खुल गई भगवान की कृपा से तो देवता हमें दिखाई देंगे। चीज है पर बहरे आदमी को क्यों नहीं सुनाई देता? क्योंकि वह जनम का बहरा है कैसे सुनाई दे। जनम का अन्धा-कैसे दिखाई दे? हम जन्म जन्मान्तरों के भूले। न देवी देवताओं को जानते और न समझते कि हैं-लेकिन हैं-और वह समय पर अपना कार्य जहां जिसका होता है करते हैं।

हर दिशा के देवता अपना काम करते हैं

सब देवी देवताओं का कार्य क्षेत्र बंटा हुआ है। पूरब में किस देवता का है? पच्छिम में किस देवता का है? उत्तर में किस देवता का है? और दक्षिण में किस देवता का है? और मध्य में किस देवता का है? सब के भाग विभाग अलग अलग बंटे हुए हैं। और सभी अपने अपने विभाग में और अपनी अपनी दिशा में काम करते रहते हैं।

भगवान गरीब किसानों की मदद करेंगे।

और अब तो उनसे प्रार्थना की गई तो मान ली गई। प्रस्ताव पास हो गया तो काम उनको करना ही है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

तो आज का दिन बहुत पवित्र है। हमारे नर-नारी और यह देखिये अभी तो टेन्टों में सभी भरे पड़े हुये हैं। और यह अभी तो आने का समय शुरू हुआ है क्यों कि आज तो अन्तिम दिन है। तो गुजरात की प्रजा बहुत धार्मिक। ये किसान हमको पगड़ी में दिखाई देने लगे। बहुत लोग आ गये गाड़ियों से। चलें। बाबा जी का ऐसा सन्देश और ऐसा सतयुग आगमन कभी नहीं देखा। न कभी सुना। तो मैं तो महती धूप में और बरसात में काम करने वाले किसानों के लिए बहुत कुछ काम कर रहा हूं। भगवान उनकी खेती में और भगवान उनके घर में भगवान उनके जानवरों में और भगवान उनकी मेहनत में। और भगवान उनकी बरसात में। भगवान उनके जाड़े में और भगवान उनकी गर्मी में चलकर किसानों की मदद देंगे देवी देवता जिनको आदेश ऊपर से मिल गया है।

देवताओं के ऊपर भी पार्लियामेन्ट है

ऊपर में बहुत बड़ी एक पार्लियामेन्ट है। लोक सभा कहते हैं। वह देवताओं की लोक सभा नहीं है। यह और जगह पर है। उस लोक सभा में भी प्रस्ताव पास हो गया। और देवी देवताओं को आदेश दे दिया गया। तब देवी देवताओं ने अपना प्रस्ताव पास कर लिया। वे फिर अब इधर आदेश देने वाले हैं। और वह सब आदेश आप को सुना दिये जायेंगे। थोड़ा समय तो जरूर लगेगा। १००० आदेश हैं। जो उन्होंने पास किया है कुल १००० आदेश हैं। वह आपको सुनाये जायेंगे। लेकिन अगर आज सुनाया भी जाय तो आपको याद नहीं रहेगा।

धीरे धीरे सब समझ में आ जायेगा

तो धीरे धीरे शनैः शनैः एक एक बात आपके मस्तक में ठोंक ठोंक करके यानी अन्दर बैठा दी जायेगी। सुना दी जायेगी। तब आपको समझ में आ जायेगा कि बिलकुल ठीक है। यह तो आप जानते हैं सब कि बाबा जी जो कुछ बोला करते हैं वह बोला हुआ कभी झूठ होता नहीं। यह तो आपको विश्वास हो गया। बाबा जी को क्या है कोई स्वार्थ है? कुछ नहीं। बाबा जी के पीछे जो जन समूह है पूरा पूरा नर नारी विश्वास करता है। बाहर से भी विश्वास करता है और अन्दर से भी विश्वास करता है। नर नारी विश्वास करते हैं कि बाबा जी हमको बाहर से भी लाभ देते हैं। बाहर से भी सहयोग करते हैं और अन्दर से भी सहयोग करते हैं। हम तो

यह कहते हैं कि बाहर का सहयोग हो या न हो लेकिन आत्मा का सहयोग हो जाय तो क्या यह मामूली बात है। जो आदमी आत्मा को नर्कों में, गढ्ढो में, चौरासी मे न जाने दे यह साधारण बात है क्या? राज त्यागने पर भी अगर यह चीज हो जाय तो आप बहुत सस्ती समझना। और शरीर के यानी कोढ़ हो जाय और चिथड़े चिथड़े उड़ जांय और आत्मा की सम्भाल हो जाय तो आप इसको सस्ता समझना बहुत सस्ता।

दोनों तरफ से सहयोग देते हैं

तो इसलिए महान आत्मायें भारत में दोनों तरफ सहयोग देती हैं। बाहर भी और अन्दर भी। और बाहर की बुराई और अन्दर की बुराई दोनों को साफ करती हैं। अन्दर का ज्ञान और बाहर का ज्ञान दोनों को बताकर उनका मन ऐसा निर्मल वे महान आत्मायें करती हैं कि फिर उस बुराई की तरफ उनका मन जाये नहीं। और अच्छाई की तरफ लग जाये।

अब यह किधर जायेगा ?

तो यह बड़े भाग्य की बात है। अहो भाग्य है। हम यह समझते हैं कि गुजरात में यह ढिंढोरा पिटा है। अब यह किधर को जायेगा जोर शोर के साथ में। जिस तरह से एक आंधी आती है पूरब पच्छिम की तरफ से। वो जिधर से चलती है उसकी दिशा ठीक उल्टी होती है। अब यह साकेत महायज्ञ अयोध्या में हुआ। और एक बारगी उठ कर अहमदाबाद साबर मती में आ गया। अब सतयुग आगवन का जो ढिंढोरा यह आने वाला है अब यह किधर जायेगा यह बाबा जी आज बताने को नहीं हैं। अब हम सब लोगों को सतयुग का प्रादुर्भाव, सतयुग की वस्तुयें, सतयुग का सदाचार, सतयुग का प्रेम, सतयुग की दया सतयुग का रहम, हम सब लोगों को सबका इन्तजार। सतयुग जैसे मनुष्य, सतयुग जैसे वीर और सतयुग जैसे सत्यवादी और सतयुग जैसे सम्मानी और सतयुग जैसे तपस्वी और सतयुग जैसे त्यागी और सतयुग जैसे ज्ञानी और सतयुग जैसे आत्म बोधी और सतयुग जैसे ब्रह्मदर्शी अब तो आप को इन्तजार थोड़े समय के लिए करना ही पड़ेगा।

अब आप महायज्ञ की परिक्रमा लगायें

हां तो आप लोग सतयुग आगवन साकेत महायज्ञ की एक परिक्रमा लगायें। आप सबके सब खड़े हो जांय। मुझे यह यह मालुम नहीं। लेकिन मैं यह अनुरोध करूँगा कि आप लोग जब कभी भी ऐसे कार्यक्रमों में उपस्थित हों तो नंगे पैर चलना चाहिये। कभी भी जब परिक्रमा लगाया जाता है तो नंगे पैर चला जाता है। उसका मतलब यह होता है कि बालुका के कण में क्या चीज तैयार की गई जो नीचे पैर से लेकर सिर तक किस चीज का संचार हो यह आप को पता नहीं। तो नंगे पैर चलने से बहुत बड़ा महत्व है हमारी इस भूमि पर परिक्रमें में लोग इसको जान नहीं पाते हैं। आजकल की सभ्यता के अनुसार हम लोग ऐसा समझते हैं कि महात्मा लोग इसी प्रकार पता नहीं क्या कहते होंगे। लेकिन हर राज हर रहस्य जो है भरा पड़ा हुआ है।

तो सब के सब जरा पीछे मुड़ जांये और जरा एक परिक्रमा तो लगायें। आप सब लोग पीछे मुड़ जाओ।

Scanned with CamScanner

मांसाहर पाप है

बकरी पाती खात है, ताकी खींची खाल ।
जो नर बकरी खात हैं, ताकी कौन हवाल ॥

भाइयों, मांसाहार बहुत बुरी चीज है। पशुओं का खून और मांस उदरस्त करने से ही आज संसार में पशु वृत्ति का बोलबाला है। पशु के शरीर के सूक्ष्म परमाणुओं को अपने शरीर में प्रवेश करा कर अपनी निर्मल बुद्धि को पशुवत बनाना बहुत बुरा है।

विवेक एक देवी गुण मनुष्य को प्राप्त है। इसी विवेक से ही हम और पशुओं से सर्वोपरि माने जाते हैं। यदि पशु के मरे मांस को उदरस्त कर हम उन विवेकहीन जानवरों के सूक्ष्मातिसूक्ष्म परमाणुओं को अपने शरीर में प्रवेश कराते हैं तो हम भी विवेकहीन और बुद्धहीन तथा पशुवत व्योहार करने वाले हो जायेंगे।

इसलिए मेरे प्यारे, मांसाहार आज ही से त्याग दो निर्मल बुद्धि को और कुशाग्र बनाने वाले सात्विक भोजन का व्योहार करो। विवेक और विचार को पवित्र और प्रभुमय बनाओ।

यही प्रत्येक धर्म का सार है

Scanned with CamScanner

जयगुरुदेव

सतयुग आगवन साकेत महायज्ञ (तृतीय)

काशी विश्वनाथ हर-हर महादेव जी का स्वप्न
बाबा जयगुरुदेव को--काशी पहुँचो
सतयुग आने की तैयारियाँ करो-मैं शामिल रहूँगा
दो करोड़ नर-नारियों का जमाव बाबा जयगुरुदेव के आवाहन पर
१५-२-७९ से २५-२-७९ तक गंगा की रेती में—देश वासियों
जल्द चलो--काशी पहुँचो--मुक्ति लो ।
पूर्णाहुति शिवरात्रि को २५ फरवरी १९७९ में

—जयगुरुदेव धर्म प्रचारक संघ

देख वोजूद में अजब बिसराम है

देख वोजूद में अजब बिसराम है,
होय मोजूद तो सही पावे ।
फेरि मन पवन को घेरि उलटा चढ़ै,
पांच पचीस को उलटि लावै ॥
सुरत की डोर सुख सिंध का झूलना,
घोर की सोर तहँ नाद गावै ।
नीर बिन कँवल तहँ देखि अति फूलिया,
कहैं कबीर मन भँवर छावै ॥

Scanned with CamScanner

अमर सन्देश

सतपुरुषों के बचन और वाणी ही संसारी जीवों के लिये सदा से प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। इस लिये अपने जीवन में नया मोड़ दीजिये। अमर सन्देश के अनमोल बचनों को पढ़ कर प्रेरणा प्राप्त कीजिये और संतों का संग ढूंढ कर सतसंग कीजिये जीवन को सात्विक, प्रेमी और मानवी बनाइये। अमर सन्देश में छपे स्वामी जी महराज के अमर सन्देश व्यक्तिगत सामाजिक, मानसिक और आत्मिक क्रांति ला रहे हैं। आप भी इसे पढ़कर समय के संग आगे बढ़िये और इष्ट मित्रों को पढ़ाइये। यह समय की पुकार है।

—० सेवा भक्ति और साधन ०—

❀ गुरु आज्ञा, चाहे सैन में हो या बैन में, पालन ही उनकी सेवा है।

❀ गुरुदेव की नीति, रीति और प्रीति का निरन्तर ध्यान रखना कहीं भी विरोध न आने देना ही भक्ति है।

❀ परमानन्द की प्राप्ति के लिये दोषों का त्याग कर अन्तः करण को पवित्र बनाकर गुरू के एक एक शब्द पर कुर्बान होना ही साधन है।

मधु संचय

❀ शिवनेत्र आज भी मिलता है।

❀ शिवनेत्र प्राप्ति का गुरू मिलना चाहिये।

❀ सच्चा गुरु मिलने पर ईश्वर प्राप्ति सरल है।

❀ ईश्वर जीते जी मिलता है इसी मनुष्य शरीर से।

❀ गुरु आज्ञा को पूरा करना ही गुरु पूजा है। अपनी शक्ति लगा देने के बाद शक्तिमान प्रभु की ओर देखना ही प्रार्थना है।

Scanned with CamScanner

जयगुरुदेव अमर सन्देश
वर्ष २१, अंक २ जून १९७८

रजिस्टर्ड एल-4
Licence No. 1 Licenced to
Post without Prepayment

क्रमांक पुस्तक का नाम	मूल्य
१-साधक विघ्न निरुपण	६० पैसे
२-याद रक्खो गुरु के बचन	४० पैसे
३-प्रति दिन के विचार	६० पैसे
४-परमार्थी उपदेश	७५ पैसे
५-सन्तमत में सभा निर्माण	६० पैसे
६-तुलसी वाणी	६० पैसे
७-यम लोकमार्ग	५० पैसे
८-ज्ञान रश्मि	७५ पैसे
९-हम गुरु को कितना मानते हैं	०५ पैसे
१०-उपरोक्त ९ पुस्तकों की गत्ते की जिल्द	५ रू०

—: पद्य में :—

११-प्रार्थना चेतावनी संग्रह पूरी सजिल्द ३) रू० डाक खर्च कम से कम २) । पुस्तकों का सेट तथा प्रार्थना की किताब मंगाने के लिए डाक खर्च सहित मूल्य पहले भेजें । वी० पी० भेजने का नियम नहीं है ।

१२-स्वधर्म साप्ताहिक वार्षिक मूल्य १०) स्वामी जी की विचार धारा का साप्ताहिक समाचार पत्र स्वधर्म साप्ताहिक निकलता है जिसका वार्षिक मूल्य १०) तथा अर्द्ध वार्षिक मूल्य ५) इसका रुपया व्यवस्थापक "स्वधर्म साप्ताहिक, २३, पाण्डेय बाजार आजमगढ़ के पते पर भेजें ।

रुपया भेजने तथा पुस्तकें मंगाने का पता—
व्यवस्थापक 'अमर सन्देश'
२३, पाण्डेय बाजार आजमगढ़

(नाम पता यहां है)

ग्राहक संख्या ....

श्री ....शामप्यारे यादव....

पता

जो प्रेमी पाठक मई माह से ग्राहक बने हैं उनका वार्षिक चन्दा समाप्त हो गया है । आगर उन्होंने चन्दा न भेजा हो तो १०) वार्षिक चन्दा शीघ्र भेज दें ।

स्वामी और प्रकाशक—संत तुलसी दास जी महाराज, चिरौली सन्त आश्रम, कृष्णा नगर मथुरा एवं मुद्रक—विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल के निमित्त अमर ज्योति प्रेस, आजमगढ़ में मुद्रित

Scanned with CamScanner